बाल-विज्ञान

भाग - 2

प. पू. राष्ट्रसंत युगप्रमुख गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज

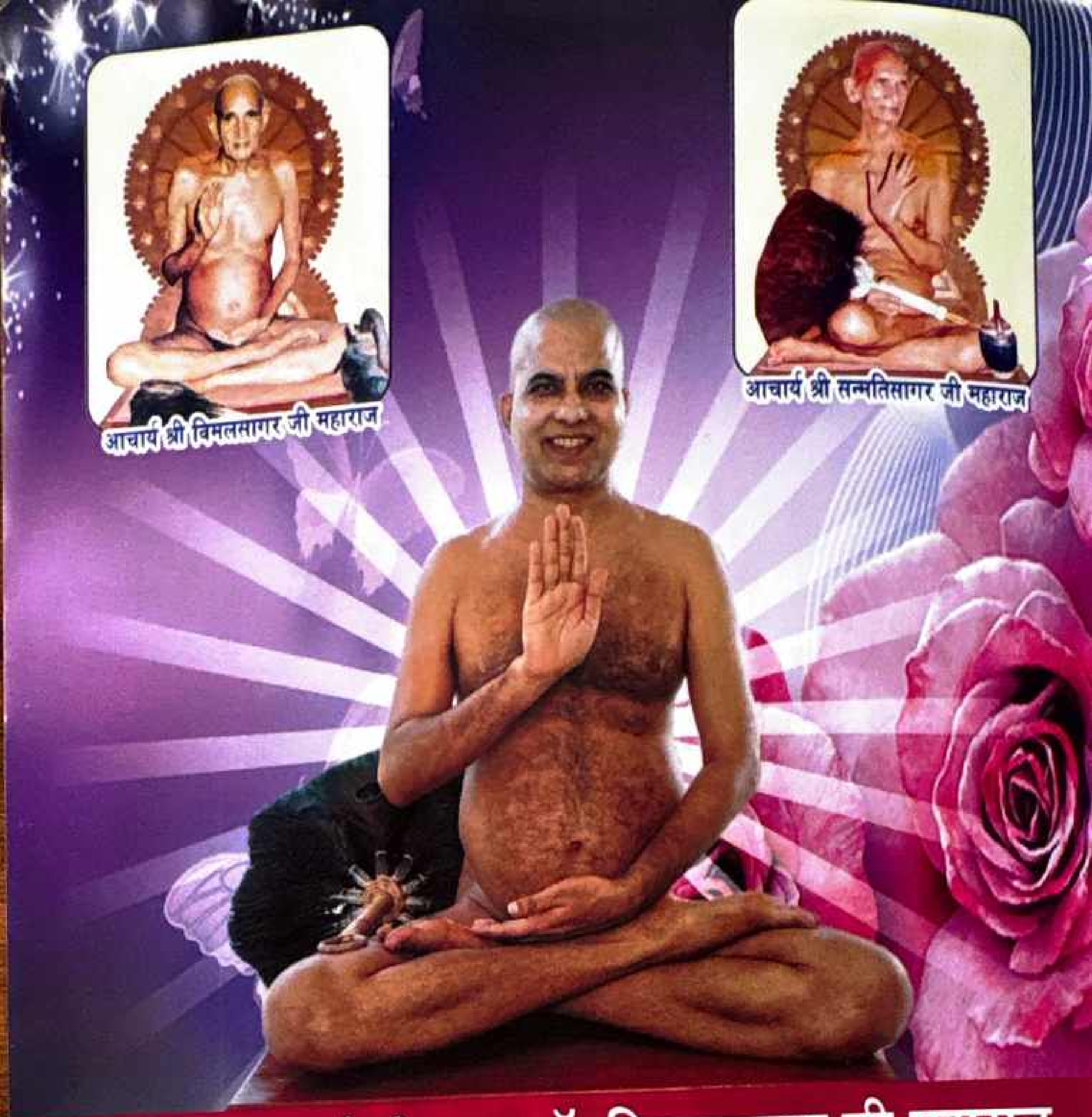

प. पू. गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागर जी महाराज

:: पुण्यार्जक ::

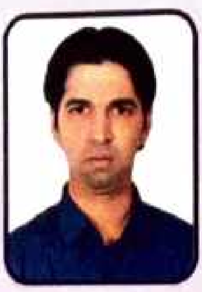

श्रीमती भरतेश्वरी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री रघुवीर सिंह जैन
श्रीमती इन्दू जैन – श्री निखिल जैन एवं परिवार
नेहरु नगर, गाजियाबाद

श्री वरतेश चन्द जैन
श्रीमती राजुल जैन
पन्ना म.प्र.

बाल-विज्ञान

(नैतिक शिक्षा भाग 2)

-: लेखक :-

प.पू. विश्वहितैषी, राष्ट्रसंत, गणाचार्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य,

श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

-: प्रकाशक :-

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

जैन कीर्तिस्तम्भ, बस स्टैण्ड रोड़, भिण्ड (म.प्र.)

कृति : बाल-विज्ञान भाग-2

प्रसंग : प. पू. आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज का रजत आचार्य पदारोहण वर्ष 2017

कृतिकार : प. पू. आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज

संस्करण : 2017

प्रति : 2000

मूल्य : 20/-

प्राप्ति स्थान :

1. श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) संपर्क सूत्र-पं. वीरेन्द्र जैन मो. 9754803220
2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी बीना-470113 जिला-सागर (म.प्र.) मो. 9425135816
3. विराग फाउण्डेशन
सी/ओ, श्री अरुण कोटडिया, 11-ए
विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुर,
अहमदाबाद- 380013 (गुजरात)
मो. 9825900124
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह
13, वृंदावन सोसायटी, डेरी रोड़ मेहसाना-2 (गुज.) मो. 9898494914, 9829452020
5. विराग महिला मंच, बोरीवली, मुंबई (महा.)
6. पुष्पा जी, जयपुर (राज.)
7. पंकज जैन, विराग युवा मंच, इन्दौर (म.प्र.)

मुद्रक पारस प्रकाशन दिल्ली-32
मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613
E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

जीवन की महत्वपूर्ण झांकियाँ
परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज

पूर्व नाम	:	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म	:	2 मई, 1963, गुरुवार (वैशाख शुक्ला 9, संवत् 2020, पथरिया)
माता-पिता	:	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी) ब्र. श्री कपूरचन्दजी जैन (संघस्थ पू. क्षुल्लक श्री 105 विश्वंद्य सागरजी)
बहिन	:	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	:	श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैया जी
लौकिक शिक्षा	:	इण्टर मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन, दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी, म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	:	20 फरवरी, 1980 (फाल्गुन शु 5 सं 2036 बुधवार, शहडोल म.प्र.)
नामकरण	:	पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु	:	प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महा.
मुनि दीक्षा	:	9 दि. 1983 (मगसर शु 5 वि.सं. 2040), औरंगाबाद (महा.)
मुनि दीक्षा गुरु	:	प.पू. निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
आचार्य पद	:	8 नवम्बर, 1992 (का.शु. 13 वि.सं. 2049) रविवार, द्रोणगिरी
संयमी सृजन	:	आचार्य-8, मुनि-68, गणिनी आर्यिका-4, आर्यिका-64, ऐलक-5, क्षुल्लक-32, क्षुल्लिका-22 कुल-203
प्रशिष्य	:	100 से अधिक
समाधि सल्लेखनाएँ	:	लगभग 81 एवं अनेक तिर्यंच प्राणी
चातुर्मास	:	1980 से 2017 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महाराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.) टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि, (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.) मढ़ियाजी (जबलपुर) भिण्ड (म.प्र.) भिण्ड (म.प्र.) भिण्ड (म.प्र.)शिखरजी (झारखण्ड) गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), भिलाई (छत्तीसगढ़) कारंजालाड (महा) मूडबिद्री (कर्नाटक) मेलचित्तमूर (तमिलनाडू) उद्गांव (महा) मुम्बई (महा) गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.) अजमेर

		(राज), जयपुर (राज) इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरी (म.प्र.) पथरिया (म.प्र.), भिण्ड, कविनगर (गाजियाबाद)।
साहित्य सृजन	:	1. बारसणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय 'सर्वोदया संस्कृत टीका, 2. रयणसार ग्रन्थ पर 1500 पृष्ठीय 'रत्नत्रयवर्धिनी' संस्कृत टीका एवं पाहुडद्वय पर 'श्रमण प्रबोधनी' टीका लेखन जारी है, 3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।
पंचकल्याणक	:	लघु वृहद् मिलाकर-63
उपाधियाँ	:	डॉक्ट्रेट आदि 44 से अधिक
सिद्धांत वाचनाएँ	:	धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 6 पुस्तकें, शोध जारी हैं।
गोष्ठियाँ	:	विद्वत, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश-वकील, डॉक्टर्स, शासनिक सर्वधर्म सम्मेलन।
अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति अभियान	:	भिण्ड (म.प्र.), बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.), (कारंजा (महा), मेलचित्तामूर (तमिल), उद्गाँव (महा.) गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.) जिसमें 15 लाख से अधिक छात्र-छात्रायें व्यसनमुक्त, शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।
शिविर	:	प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावक संस्कार शिविर आदि।
विशेष प्रवचन	:	कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।
जेल प्रवचन	:	भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह।
न्यायालय प्रवचन	:	अजमेर
पगविहार	:	70,000 किलोमीटर से अधिक।
संघ सम्मेलन	:	भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर।
वृहद् यति सम्मेलन एवं युगप्रतिक्रमण	:	जयपुर-झांसी (करगुवां) (200 शिष्य, प्रशिष्य, अन्य साधु भी) श्रमण-श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुनः स्थापन।

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ परिचय

विद्यापीठ की स्थापना 1988 में हुई थी। इसका प्रारम्भ में अस्थाई संचालन कार्यालय जैन चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड में रखा गया था। लेकिन वर्तमान में स्टैण्ड रोड, कीतिस्तंभ परिसर में एक विशाल भवन का निर्माण हो चुका है। इस विद्यापीठ की स्थापना दिगम्बर जैन समाज ने पूज्य आचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के सदुपदेशों से प्रभावित होकर की है तथा यह एक संरक्षक मंडल के मार्गदर्शन में प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा संचालित है। कमेटी के चुनाव की विधिवत् व्यवस्था है। इसके संचालन में दिगम्बर जैन समाज के अतिरिक्त अन्य किसी वर्ग से या शासन से वित्तीय सहायता नहीं ली जाएगी।

विद्यापीठ का प्रमुख लक्ष्य जैन समाज को सुसंगठित करना, जैन आचार-धर्म संस्कृति एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करना, तद्नुरूप संस्थाओं की स्थापना एंव उनका संचालन करना (जैसे-प्रकाशन संस्थान, शोध संस्थान, छात्रावास, जैन विद्यालय, पाठशाला, व्रती आश्रम, जैन परीक्षा बोर्ड) प्रमुख लक्ष्य है जिससे जैन समाज की नई पीढ़ी धर्म संस्कारों से परिपूर्ण होकर धर्म, तीर्थ और व्रतियों की रक्षा का दृढ़ संकल्प लेकर समाज सेवा कर सके। निराश्रित भाई-बहनों एंव विधवा बहिनों की सहायता हेतु योजनाएँ प्रारम्भ करने के प्रस्ताव हैं।

सम्प्रति विद्यापीठ के अन्तर्गत 15 पाठशालाएँ चल रही हैं जिनमें 1200 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड द्वारा परीक्षा की व्यवस्था है। अन्य पाठशालाओं को भी बोर्ड से संबद्ध होने की पूर्ण सुविधा है।

विद्यापीठ प्रबन्धकारिणी अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार जैन एवं परम पूज्य बालयोगी, प्रज्ञाश्रमण आचार्य 108 विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से इसकी व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क स्थापित करें। पाठशाला संचालक गण परीक्षा बोर्ड से संबद्धता हेतु शीघ्र आवेदन कर छात्रों को इस वर्ष परीक्षा में शामिल करें।

अध्यक्ष
वीरेन्द्र कुमार जैन
डोली रेडिमेड सदर बाजार, भिण्ड

गुरुवाणी.....

प्राचीन समय में हर मानव संस्कृति के अनुसार ही अपने जीवन को बनाता था, उस समय की गुरुकुल शिक्षाएँ थी। हर गुरुकुल में धर्म शिक्षा के साथ-साथ लौकिक शिक्षा दी जाती थी, ताकि विद्यार्थी अपने आपको पापाचरण से बचाकर सदाचार की ओर प्रवृत्त कर सकें। धर्माचरण पूर्ण शिक्षा ही प्राणियों को सुख शान्ति की जन्म जननी है।

बिना शिक्षा के सत्य ज्ञान नहीं हो सकता, और सत्य ज्ञान के बिना जीवन पापाचरण से बचकर सुखी भी नहीं बन सकता-जब हम स्वयं सुखी नहीं बन पाये तो फिर परिवार, समाज, नगर, देश, राष्ट्र आदि को कैसे सुखी बना सकते हैं। अतः आज आवश्यकता है कि मानव मात्र अपने जीवन को धर्म ज्ञान एवं आचरण से सुसंस्कारित करें। ताकि वे स्वयं को सुखी बनाते हुए विश्व के प्राणी मात्र को सुखी बनाने में मार्ग दर्शक हों। ऐसे ही प्राणियों से परिवार, समाज, राष्ट्र, आदि में सुख शान्ति की आशा हो सकती है, दूसरे से नहीं।

इसी उद्येश्य को लक्ष्य में रखकर इस कृति का सृजन किया गया है। विश्वास है कि बाल विज्ञान आबाल वृद्धों को नैतिकता की जागृति के साथ-साथ दीपिका का काम करेगी। सभी धर्म प्रेमी सज्जन पूर्ववत् इसका समादर करेंगे।

ॐ नमः श्री वीतरागाय नमः

श्री जिन मुखोद्भव श्रुताय नमः

परम निर्ग्रन्थ गुरुभ्यो नमः

गणाचार्य विराग सागर

प्रार्थना

रचियता : 105 क्षुल्लक श्री पूर्णसागर जी
(प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज)

पंच प्रभु को नमन करेंगे, भजन करेंगे तपन करेंगे।
कर्तव्यशील हम सदा बनेंगे, सत्पुरूषों का मार्ग गहेंगे॥
सूर्योदय से पूर्व उठेंगे, उठते ही प्रभु नाम भजेंगे।
दिया हुआ फिर पाठ करेंगे, तदनंतर गृह कार्य करेंगे॥
जिनेन्द्र प्रभु का दर्श करेंगे, गुरुजन का सम्मान करेंगे।
बिना छना जल काम न लेंगे, रात्रि भोजन त्याग करेंगे॥
खूब पढ़ेंगे मनन करेंगे, कभी किसी से नहीं लड़ेंगे।
व्यर्थ कभी नहीं बात करेंगे, दिया हुआ नित पाठ पढ़ेंगे॥
सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे, कभी किसी से नहीं डरेंगे।
गाली मुख से कभी न देंगे, मैत्री सबसे नित्य करेंगे॥
निंदा किसी की नहीं करेंगे, पापों का हम त्याग करेंगे।
ब्रह्मचर्य व्रत हृदय धरेंगे, लालच से प्रभु दूर रहेंगे॥
सरल सत्य व्यवहार करेंगे, णमोकार नित जाप करेंगे।
सदाचार रसपान करेंगे, शीघ्र पूर्ण भगवान बनेंगे॥

अनुक्रमणिका

मेरी भावना	:	1
इन्द्रियाँ	:	3
पाप	:	10
सप्त व्यसन	:	15
अष्ट मूलगुण	:	20
आलोचना पाठ	:	27
भगवान पार्श्वनाथ	:	30
कषाय	:	33
देव दर्शन	:	37
गुरु उपासना	:	43
स्वस्थ जीवन के उपाय	:	49

अध्याय-1

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो,
भक्ति-भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो।।1।।

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं,
निजपर के हित साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं।।2।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे,
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

अंहकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ,

देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ।।4।।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे,
दीन, दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा स्त्रोत बहे।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य-भाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे।।7।।

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुख में कभी न घबरावे,
पर्वत-नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे,
रहे अडोल-अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे।।8।।

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे,
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञानचरित उन्त कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे।।9।।

ईति भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग -मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे।।10!!

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय-कटुक कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे,
बनकर सब युगवीर हृदय से, देशोन्नति रत रहा करे,
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे।।11।।

अध्याय-2

इन्द्रियाँ

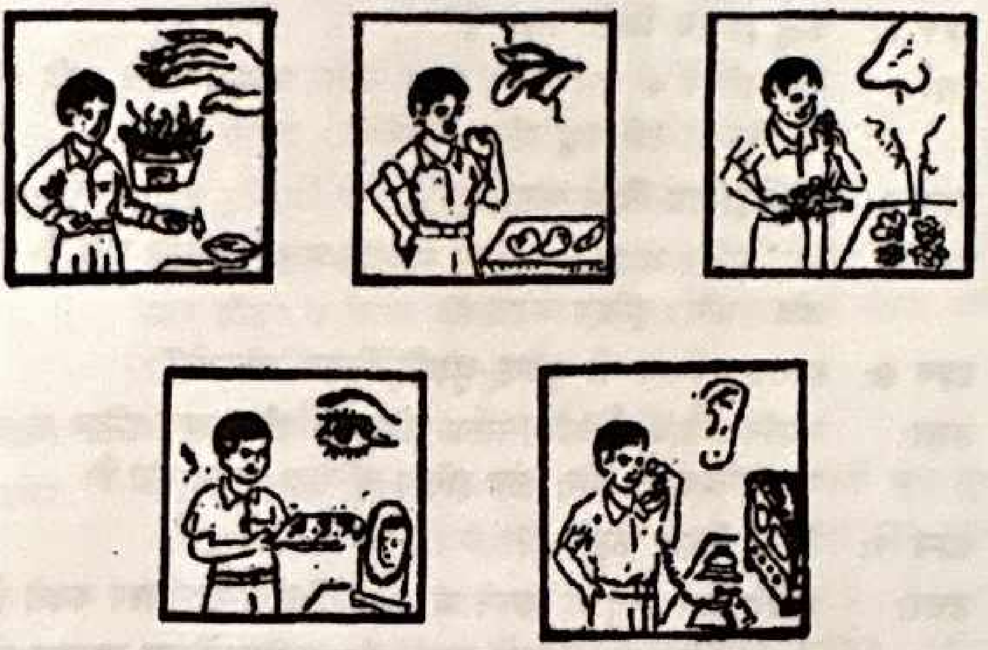

प्रश्न 1: इन्द्रिय किसे कहते है?

उत्तर: जिससे संसारी जीव की पहचान होती है उसे इन्द्रिय कहते हैं। अथवा जो अहमिद्रों के समान अपने अपने विषयों में स्वतंत्र हों उसे इन्द्रिय कहते हैं अथवा इन्द्रिय नाम कर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 2: इन्द्रियों के भेद बताओ?

उत्तर: इन्द्रियों के भेद पाँच होते हैं

1. स्पर्शन इन्द्रिय (त्वचा)
2. रसना इन्द्रिय (जीभ)
3. घ्राण इन्द्रिय (नासिका)
4. चक्षु इन्द्रिय (नेत्र)
5. श्रोत्र इन्द्रिय (कान)

प्रश्न 3: स्पर्शन इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर: जिस इन्द्रिय के द्वारा ठण्डा-गर्म, कठोर-नरम आदि स्पर्श का

ज्ञान होता है उसे स्पर्शन इन्द्रिय कहते हैं। अथवा स्पर्शन इन्द्रिय नाम कर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को स्पर्शन इन्द्रिय कहते हैं। (नोट इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों की परिभाषा करें।)

प्रश्न 4: रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर: जिस इन्द्रिय से खट्टा, मीठा, चरपरा, कड़वा, कषायला आदि स्वाद का ज्ञान हो उसे रसनेन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 5: घ्राण इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर: जिस इन्द्रिय के द्वारा सुगन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान हो, उसे घ्राण इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 6: चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर: जिस इन्द्रिय के द्वारा लाल, पीला, नीला, सफेद, काला आदि वर्ण का ज्ञान हो उसे चक्षु इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 7: श्रोत्र इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर: जिस इन्द्रिय के द्वारा सा रे गा म आदि शब्दों का ज्ञान होता है, उसे श्रोत्र (कर्ण) इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 8: प्रत्येक इन्द्रिय के पृथक्-पृथक् विषय बताओ?

उत्तर: स्पर्शन इन्द्रिय के आठ, रसना इन्द्रिय के पाँच, घ्राण इन्द्रिय के दो, चक्षु इन्द्रिय के पाँच, श्रोत्र इन्द्रिय के सात विषय होते हैं।

प्रश्न 9: विषय किसे कहते हैं?

उत्तर: इन्द्रिय द्वारा वस्तु के जानने के प्रकार विशेष को विषय कहते हैं।

प्रश्न 10: स्पर्शन इन्द्रिय के विषय पृथक्-पृथक् गिनाते हुए दृष्टान्त दो?

उत्तर: स्पर्शन इन्द्रिय के आठ विषय हैं

1. हल्का (रूई)
2. भारी (लोहा)
3. कड़ा या कठोर (पत्थर)
4. नरम (मक्खन)
5. रूखा (रेत)
6. चिकना (घी)
7. ठण्डा (बर्फ)
8. गर्म (आग)

प्रश्न 11: रसनेन्द्रिय के विषय उदाहरण सहित बताओ?

उत्तर: खट्टा (नींबू), मीठा (शक्कर), कड़वा (नीम), कषायला (आँवला), चरपरा (मिर्च)।

प्रश्न 12: घ्राणेन्द्रिय के विषय उदाहरण सहित बताओ?

उत्तर: सुगन्ध (फूल, इत्र, सेंट), दुर्गन्ध (सड़ी गली वस्तु एवं फल, कचरा आदि)।

प्रश्न 13: चक्षु इन्द्रिय के विषय उदाहरण सहित बताओ?

उत्तर: लाल (रक्त), पीला (पका आम), नीला (आकाश), सफेद (दूध) काला (कोयला, कोयल, कौआ)।

प्रश्न 14: कर्णेन्द्रिय के विषय उदाहरण सहित समझाये?

उत्तर: स षड्ज (कण्ठ से उत्पन्न गरूड़ का स्वर)

रे ऋषभ (शिर से उत्पन्न गाय का स्वर)

ग गांधार (नासिका से उत्पन्न बकरी का स्वर)

म मध्यम (हृदय से उत्पन्न क्रौंच पक्षी का स्वर)

प पंचम (मुख से उत्पन्न कोयल का स्वर)

ध धैवत (तालु से उत्पन्न घोड़े का स्वर)

नि निषाद (सर्व शरीर से उत्पन्न हाथी का स्वर)

प्रश्न 15: पाँच इन्द्रियों के विषय में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: स्पर्शन इन्द्रिय के विषय में हाथी, रसना इन्द्रिय के विषय में मछली, घ्राण इन्द्रिय के विषय में भौंरा, चक्षु इन्द्रिय के विषय में पतंगा, कर्ण इन्द्रिय के विषय में हिरण, सर्प।

प्रश्न 16: ये प्राणी इन्द्रिय विषय में क्यों प्रसिद्ध हैं?

उत्तर: क्योंकि, उक्त प्राणी एक-एक इन्द्रिय विषयों में अपनी सुध-बुध भूलकर इतने मोहित हो जाते हैं कि वे अपनी स्वतंत्रता तथा अपने प्राण तक खो देते हैं।

प्रश्न 17: स्पर्शन इन्द्रिय के विषय में हाथी कैसे प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: हाथी को पकड़ने वाले शिकारी हाथी के आवागमन के मार्ग में गड्ढा खोदकर उसे घास फूस से ढँककर कागज की एक हथिनी रख देते हैं। हथिनी को देखकर विषयांध हाथी आकर गड्ढे में गिर जाता है। उसे कई दिनों तक गड्ढे में भूखा रखा जाता है। जब काफी कमजोर हो जाता है तो शिकारी उसे पकड़ लेते हैं और जिंदगी भर तक उसे गुलाम बनाए रहते हैं। देखो, हाथी ने स्पर्शन इन्द्रिय की आसक्ति से अपनी स्वतंत्रता खोयी।

प्रश्न 18: रसना इन्द्रिय के विषय में मछली कैसे प्रसिद्ध हुई?

उत्तर: धीवर (मछुआरे) नदी-तालाब के किनारे खड़े होकर बाँस के एक छोर में प्लास्टिक का तार बाँधते हैं और दूसरे छोर में लोहे का नुकीला तार लगाकर उसमें आटा आदि भी लगा देते हैं और उसे गहरे पानी में डालते हैं जिससे बहुत सी मछलियाँ उसी आटे को खाने के

लिये आती हैं किन्तु जैसे ही आटे को पकड़ती हैं उसी समय मछुआरे उस तार को खींच लेते हैं जिससे वह तार उनके गले में फँस जाता है और थोड़ी देर में ही वे अपने प्राण विसर्जित कर देती है। यह देखो रसनेन्द्रिय के विषय में आसक्त हुई मछली अपने प्राण खो बैठी।

प्रश्न 19: घ्राणेन्द्रिय के विषय में भौंरा किस प्रकार से आसक्त हुआ?

उत्तर: भौंरा प्रायः पुष्पों के पराग में मस्त रहता है। संध्याकाल में भौंरा जैसे ही कमल पुष्प पर बैठता है उसी समय सूर्यास्त होते ही कमल बन्द हो जाता है जिससे फिर वह उड़ नहीं पाता, अपितु गन्ध में आसक्त हुआ वह काष्ठ को छेदने की सामर्थ्य होनें पर भी कमल का कुछ भी बिगाड़ नहीं करता और उसी में बैठे-बैठे अपने प्राण न्यौछावर कर देता है। यह देखो घ्राण इन्द्रिय के विषय में आसक्ति की प्रत्यक्ष दशा।

प्रश्न 20: चक्षु इन्द्रिय के विषय में पतंगा कैसे प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: रात्रि के समय बल्ब या दीपक आदि के प्रकाश रूप चक्षु इन्द्रिय में विषयासक्त हो बहुत से जीव कीट, पंतगे उड़-उड़कर दीपक की ज्योति की ओर दौड़ते हैं, यह उनका मुख्य विषय है। वे उसके रंग आदि में इतने मस्त हो जाते हैं कि फिर उन्हें होने वाले दुख या जीवन विनाश का जरा भी ध्यान नहीं रहता। ऊपर से बार-बार गिरने अथवा बल्ब से टकराने से उनके पंख, पैर आदि तक टूट जाते हैं फिर भी वे उक्त विषय से मुक्त नहीं होते, अनेक जन्तु तो दीपक की लौ में अपने प्राणों तक की आहुति दे डालते हैं, यह देखो चक्षु इन्द्रिय के प्रति विषयासक्ति का फल।

प्रश्न 21: कर्ण इन्द्रिय के विषय में हिरण कैसे प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: हिरण की सबसे अधिक रूचि संगीत की ध्वनि में होती है। इसलिये पारधी लोग सुरीली आवाज में बाँसुरी बजाते हैं। उस आवाज में आसक्त हुआ हिरण उस ओर खिंचा चला जाता है तथा स्तब्ध, एकटक हो संगीत सुनने लगता है। उसमें आसक्त हुआ वह सब कुछ भूल जाता है। तभी पारधी जाल डालकर उन्हें पकड़ लेता है।

प्रश्न 22: पंचेन्द्रिय विषयों में आसक्त हुए उक्त जीवों की यह दुर्दशा हुई इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर: जब एक-एक इन्द्रिय के विषयों में आसक्त हुए प्राणियों की यह दुर्दशा हुई तो हम पाँचों इन्द्रियों के धारी हैं। सभी विषय हमारे पास उपलब्ध हैं तो हमारी क्या दशा होगी? ऐसा विचार करने से विषयों से विरक्ति होती है। हमें इन्द्रियों के विषय सेवन से अथवा आसक्ति से बचना चाहिए।

प्रश्न 23: पंचेन्द्रिय के विषयों को हम कैसे जीतें?

उत्तर: सर्वप्रथम स्थूल विषयों को जीतो अर्थात् स्पर्शन इन्द्रिय जीतने के लिए वेश्यागमन और परस्त्री गमन नामक व्यसन तथा लिपिस्टिक, क्रीम आदि का त्याग करें। रसनेन्द्रिय को जीतने के लिए मधु, माँस, अण्डे, शराब आदि अभक्ष्यों का त्याग करें।

घ्राणेन्द्रिय को जीतने के लिए इत्र, सेन्ट आदि का त्याग करें। चक्षु इन्द्रिय को जीतने के लिये सिनेमा, टी.वी., वीडियों आदि देखने का त्याग करें। कर्ण इन्द्रिय को जीतने के लिए फिल्मी गीत गाने सुनने का त्याग करें।

प्रश्न 24: इन्द्रियाँ किसमें पाई जाती हैं

उत्तर: समस्त इन्द्रियाँ देहधारी जीवों में पाई जाती हैं इसलिये उनके एकेन्द्रिय जीव, द्वीन्द्रिय जीव, त्रीन्द्रिय जीव, चतुरिन्द्रिय जीव, पंचेन्द्रिय जीव इस प्रकार पाँच भेद हो जाते हैं।

प्रश्न 25: एकेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए?

उत्तर: जिन जीवों के मात्र एक स्पर्शन इन्द्रिय होती है उन्हें एकेन्त्रिय जीव कहते हैं। जैसे पृथ्वी, अग्नि, वनस्पति आदि एकेन्द्रिय जीव हैं।

प्रश्न 26: द्वीन्द्रिय जीव किसे कहते हैं, उदाहरण दें।

उत्तर: जिन जीवों के स्पर्शन और रसना ये दो इन्द्रियाँ होती हैं उन्हें द्वीन्द्रिय जीव कहते हैं जैसे लट, केंचुआ, कृमि आदि।

प्रश्न 27: त्रीन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण दें।

उत्तर: जिन जीवों के स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ होती हैं उन्हें त्रीन्द्रिय जीव कहते हैं, जैसे चींटी, चींटा, जुआँ, बिच्छू आदि।

प्रश्न 28: चतुरिन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण दें।

उत्तर: जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियाँ होती हैं उन्हें चतुरिन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे मक्खी, मच्छर, भौंरा (भ्रमर), बर्र, पतंगा, मधुमक्खी आदि।

प्रश्न 29: पंचेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण दें।

उत्तर: जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र ये पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं, उन्हें पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं, जैसे-मनुष्य, पशु, घोड़ा, गाय, बैल, सिंह, हिरण, सर्प, हाथी, देव, नारकी आदि। इन्हें सकलेन्द्रिय जीव भी कहते हैं।

प्रश्न 30: एकेन्द्रिय जीव को क्या कहते हैं?

उत्तर: एकेन्द्रिय जीव को स्थावर कहते हैं।

प्रश्न 31: द्वीन्द्रिय आदि जीवों को क्या कहते हैं?

उत्तर: दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय और पाँच इन्द्रिय वाले जीवों को त्रस कहते हैं। दो, तीन, चार इन्द्रिय वालों को विकलत्रय भी कहते हैं।

प्रश्न 32: पंचेन्द्रिय जीव के कितने भेद होते हैं?

उत्तर: पंचेन्द्रिय जीव के संज्ञी, असंज्ञी ये दो भेद होते हैं।

प्रश्न 33: संज्ञी-असंज्ञी का अर्थ बताइये?

उत्तर: संज्ञी का अर्थ है मन सहित जीव। जैसे मनुष्य, हाथी, बैल, देव, नारकी। असंज्ञी जीव के मन नहीं होता। जैसे-पानी में रहने वाले सर्प, मेंढक, कोई-कोई तोता आदि संज्ञी जीव को समनस्क तथा असंज्ञी जीव को अमनस्क भी कहते हैं।

प्रश्न 34: आपकी कितनी इन्द्रियाँ हैं?

उत्तर: हमारी पाँच इन्द्रियाँ हैं। अर्थात् हम पंचेन्द्रिय जीव हैं।

प्रश्न 35: आप विकलेन्द्रिय हो या सकलेन्द्रिय?

उत्तर: हम सकलेन्द्रिय जीव हैं।

प्रश्न 36: आप संज्ञी हैं या असंज्ञी?

उत्तर: हम संज्ञी जीव हैं।

प्रश्न 37: यदि कोई मनुष्य जन्म से अंधा हो तो वह कितने इन्द्रिय जीव है?

उत्तर: तो भी वह पाँच इन्द्रिय जीव है। क्योंकि उसे भले ही न दिखता हो, पर आँखें होती हैं। उसके पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म का उदय है इसलिये वह पंचेन्द्रिय ही है।

प्रश्न 38: संसार में बिना इन्द्रिय का जीव कौन है?

उत्तर: संसार में बिना इन्द्रिय का कोई भी जीव नहीं हैं। संसारी जीव का शरीर होता है और शरीर में इन्द्रियाँ होती हैं। अतः समस्त देहधारी जीव इन्द्रिय सहित ही होते हैं। बिना इन्द्रिय के तो देह रहित अर्थात् एक मात्र मुक्त (सिद्ध) जीव ही होते हैं।

इन्द्रियाँ

पहली ये स्पर्शन इन्द्रिय,
जो है त्वचा हमारी
दूजी है ये रसना इन्द्रिय,
जीभ स्वाद क़ी मारी
तीजी है घ्राणेन्द्रिय जानो,
नाक गंध बतलाती।
चौथी चक्षु इन्द्रिय देखो,
दुनियाँ हमें दिखाती
कर्णेन्द्रिय है अन्तिम इन्द्रिय,
सुनते दोनों कान।
ये पाँचों इन्द्रिय संसारी की,
करवाती हैं पहचान।।

इंद्रियों के विषय

हल्का, भारी, कड़ा, नरम
रूखा, चिकना, ठंडा, गरम।
स्पर्शन के आठ विषय,
मुनिराज करते हैं विजय।
खट्टा, मीठा, कड़वा, कसायला
चरपरा तो देता है रुला।
रसना के ये पाँच विषय,
मुनिराज करते हैं यह विजय।
गंध, सुगंध का ज्ञान कराती,
घ्राणेन्द्रिय यह नाक कहाती।
घ्राण के ये दो विषय,
मुनिराज करते हैं विजय
रेड, येलो, ब्लेक, व्हाईट, ब्लू,
बतलाती अपनी चक्षु।
चक्षु के ये पाँच विषय,
मुनिराज करते हैं विजय।
सा रे ग म प ध नि,
मीठी कड़वी बात सुनी।
कर्णेन्द्रिय के सात विषय,
मुनिराज करते हैं विजय

प्रश्नावली

1. निम्नलिखित जीवों के कितनी इन्द्रियाँ हैं
   बिच्छु, मक्खी, केंचुआ, कुत्ता, गाय, लट, हाथी, घोड़ा, कौवा, सर्प, मनुष्य, वृक्ष, पानी, हवा, पृथ्वी, बकरी, अग्नि।
2. पुस्तक, कुर्सी, कलम, साईकिल, रेलगाड़ी, मकान, घड़ी इनके कितनी इन्द्रियाँ हैं?
3. कान से बहरे आदमी के कितनी इन्द्रियाँ हैं?
4. तुम कितने इन्द्रिय जीव हो?
5. मृत प्राणी के कितनी इन्द्रियाँ हैं?
6. ऑपरेशन से आँखें निकलने के बाद मुनष्य कितने इन्द्रिय जीव कहलायेगा?

अध्याय-3

पाप

प्रश्न 1: पाप किसे कहते हैं?

उत्तर: निंद्य आचरण एवं निंद्य भाव (विचार) को पाप कहते हैं।

प्रश्न 2: पाप कितने होते हैं?

उत्तर: पाप अनंत होते हैं फिर भी उनके मुख्य पाँच भेद हैं।

प्रश्न 3: पाँचों पापों के नाम बताओ?

उत्तर: 1. हिंसा 2. झूठ 3. चोरी 4. कुशील 5, परिग्रह।

प्रश्न 4: हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: जीवघात को हिंसा कहते हैं। अर्थात् किसी के प्राणों को दुख पहुँचाना हिंसा है।

प्रश्न 5: हिंसा के कितने भेद हैं?

उत्तर: हिंसा के मुख्य दो भेद हैं 1. भाव हिंसा 2. द्रव्य हिंसा।

प्रश्न 6: भाव हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: राग द्वेष रूप परिणामों की कलुषता (मलिनता) को भावहिंसा कहते हैं।

प्रश्न 7: भाव हिंसा के कितने भेद हैं?

उत्तर: जितने प्रकार की परिणामों की कलुषता है उतने ही उसके भेद हैं।

प्रश्न 8: द्रव्य हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: प्रमत्त (प्रमाद) योग से प्राणों के विघात को द्रव्य हिंसा कहते हैं।

प्रश्न 9: द्रव्य हिंसा के मुख्य कितने भेद तथा कौन-कौन से हैं?

उत्तर: द्रव्य हिंसा के मुख्य चार भेद हैं
1. संकल्पी हिंसा 2. आरम्भी हिंसा 3. विरोधी हिंसा 4. उद्योगी हिंसा।

प्रश्न 10: संकल्पी हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: संकल्प पूर्वक किसी जीव को मारना या सताना संकल्पी हिंसा है।

प्रश्न 11: आरम्भी हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: गृहस्थी के कार्यों में होने वाली हिंसा आरम्भी हिंसा है जैसे अग्नि जलाना, झाडू लगाना, कपड़े धोना, जमीन खोदना, पानी फेंकना आदि।

प्रश्न 12: विरोधी हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: अन्यायपूर्ण कार्यों को रोकने में जो हिंसा होती है उसे विरोधी हिंसा कहते हैं।

प्रश्न 13: उद्योगी हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर: उद्योग (व्यापार) में जो हिंसा होती है उसे उद्योगी हिंसा कहते हैं।

प्रश्न 14: उक्त चारों प्रकार की हिंसा के त्यागी कौन होते हैं?

उत्तर: आरम्भ त्यागी (8वीं प्रतिमाधारी) से लेकर समस्त व्रती, मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक एवं क्षुल्लिका माताजी इस हिंसा के त्यागी होते हैं।

प्रश्न 15: श्रावकों को कितनी हिंसा त्याज्य है?

उत्तर: श्रावकों को यशाशक्य सभी प्रकार की हिंसा त्याज्य है किन्तु संकल्पी हिंसा तो प्रत्येक जैनी को अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

प्रश्न 16: हिंसा करने से क्या हानि है?

उत्तर: हिंसा करने से जीव नरकादि गति के दारूण दुख प्राप्त करता है।

प्रश्न 17: हिंसा करने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: धनश्री नामक महिला हिंसा करने में प्रसिद्ध हुई।

प्रश्न 18: झूठ किसे कहते हैं?

उत्तर: असत्य बोलने को झूठ कहते हैं।

प्रश्न 19: झूठ बोलने से क्या हानि होती है?

उत्तर: झूठ प्रगट होने से पराभव, अपमान होता है और संसार में उसका कोई विश्वास नहीं करता।

प्रश्न 20: झूठ बोलने से परलोक में क्या फल प्राप्त होता है?

उत्तर: झूठ बोलने वाले जीव परलोक में प्राय: गूँगे होते हैं तथा नरक, तिर्यंच गति में जन्म लेते हैं।

प्रश्न 21: झूठ बोलने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: सत्यघोष नामक (धनवान) ब्राह्मण प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 22: चोरी किसे कहते हैं?

उत्तर: बिना पूछे किसी की रखी हुई, भूली हुई या रास्ते में पड़ी हुई वस्तु को ग्रहण करना चोरी है।

प्रश्न 23: चोरी करने से क्या हानि है?

उत्तर: चोरी करने वाला प्राणी प्रथम तो सदा भयाक्रान्त रहता है फिर चोरी पकड़े जाने पर समाज में उसका तिरस्कार होता है एवं राजदण्ड भी भोगना पड़ता है।

प्रश्न 24: चोरी करने से परलोक में क्या फल प्राप्त होता है?

उत्तर: चोरी करने वाले जीव परलोक में प्राय: ऊँट, गधा, बैल, नारकी होते हैं।

प्रश्न 25: चोरी करने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: एक जटाजूट धारी तपस्वी साधु चोरी में प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 26: कुशील किसे कहते हैं?

उत्तर: कुत्सित कार्य करने को अर्थात् पर पुरूष या परस्त्री के सेवन को, उनके प्रति खोटे विचार रखने को कुशील कहते हैं।

प्रश्न 27: कुशील सेवन से क्या हानि होती है?

उत्तर: कुशील सेवन से असंख्य जीवों की हिंसा तथा अनेक असाध्य रोग जैसे एड्स, कैंसर, क्षय रोग उत्पन्न हो जाते हैं तथा प्रगट होने पर समाज में तिरस्कार एवं राज दण्ड प्राप्त होता है।

प्रश्न 28: एक बार कुशील सेवन से कितने जीवों की हिंसा होती है?

उत्तर: एक बार के कुशील (व्यसन) में नौ लाख (9,00,000) त्रस सम्मूर्च्छन जीवों की हिंसा होती है।

प्रश्न 29: कुशील सेवन से परलोक में क्या हानि होती है?

उत्तर: कुशील सेवन से परलोक में नपुंसक होते हैं तथा उनका जन्म हीन कुल में होता है तथा वे दुखी-दरिद्र होते हैं।

प्रश्न 30: कुशील सेवन में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: कुशील सेवन करने में एक कोतवाल (थानेदार) प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 31: परिग्रह किसे कहते हैं?

उत्तर: अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह करना या संग्रह करने की मूर्च्छा (इच्छा) रखने को परिग्रह कहते हैं।

प्रश्न 32: परिग्रह संग्रह से क्या हानि होती है?

उत्तर: परिग्रह संग्रह के लिए व्यापार में छल बल की नीति अपनानी पड़ती है धन की रक्षा में चिंतित रहना पड़ता है। संक्लेश रूप मोह, क्रोध भावों से आर्त्त रौद्र परिणाम होते रहते हैं, मानसिक चिंता बढ़ती है, राजदण्ड का भय होता है तथा धन छीन लिया जाता है।

प्रश्न 33: परिग्रह संग्रह से परलोक में क्या हानि होती है?

उत्तर: परिग्रह संग्रह से परलोक में वह जीव उसी परिग्रह में सर्प या कीड़ा होता है अथवा नरक के दुख को प्राप्त होता है।

प्रश्न 34: परिग्रह में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: श्मश्रुनवनीत नामक व्यक्ति परिग्रह में प्रसिद्ध हुआ (पापों में प्रसिद्ध व्यक्तियों की कथायें पुराण ग्रन्थों में पढ़ें)।

प्रश्न 35: इस पाठ को पढ़ने से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर: इस पाठ को पढ़ने से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पाँचों पाप महा दुखदायी हैं। इनसे सदैव दूर रहना चाहिए।

पाप

बुरे काम ही पाप हैं,
एक नहीं ये पाँच हैं।
पहला हिंसा पाप है,
दूसरा झूठ पाप है,
तीसरा चोरी पाप है,
चौथा कुशील पाप है,
परिग्रह पाँचवा पाप है,
सब पापों का बाप है।
दुखी बनाते पाप हैं,
छोड़े हम और आप हैं।

पापों की परिभाषा

जीवों को जो मारना,
हिंसा इसका नाम है।
बात-बात में गलत बोलना,
झूठ की पहचान है।

रखी, पड़ी किसी की वस्तु,
बिन आज्ञा लें चोरी है।
बुरे विचार या काम बुरे,
कुशील पाप तिजोरी है।
आवश्यकता से भी ज्यादा,
रखना परिग्रह कहलाता।
पाँचों पाप नरक ले जाते,
इनसे तोड़ो अब नाता।।

प्रश्नावली

1. निम्नलिखित कार्य में आप कौन-सा पाप मानते हैं?
   मारना-पीटना, किसी की वस्तु छिपाना, परस्त्री को खोटी नजर से देखना, जरूरत से ज्यादा सामान इकट्ठा करना, गुस्सा करना।
2. पाप करना अच्छा है या बुरा?
3. झूठ बोलने से क्या नुकसान है?
4. तुमने कितने पापों को छोड़ने का नियम लिया है?
5. पाप करने वालों को समाज किस दृष्टि से देखता है?
6. सिनेमा, टी.वी., नाच-गाना, आदि में समय गवाँने में कौन सा पाप है?

श्री, श्रीमान और जी

1. अपने गुरुजन, माता-पिता के नाम का उच्चारण करते समय नाम के प्रारम्भ में 'श्री' या 'श्रीमान' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।
2. नामोच्चारण के अंत में 'जी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।
3. यदि वे कोई बात समझायें तो बीच-बीच में 'जी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।
4. यदि वे कोई बात हाँ या ना में पूछें तो 'जी हाँ' या 'जी ना' कहना चाहिए।
5. इस प्रकार हमारी श्री, श्रीमान तथा जी की प्राचीन सभ्यता है।
6. बड़ों के लिए 'आप' शब्द का प्रयोग करें, 'तू', 'तेरा' शब्द का प्रयोग नहीं करें।
7. अधिक बोलने की बजाय अधिक सुनना चाहिए।
8. बोलो तो सदा सत्य, हितकर, प्रिय, मर्यादित व मधुर वचन बोलो।

अध्याय-4
सप्त व्यसन

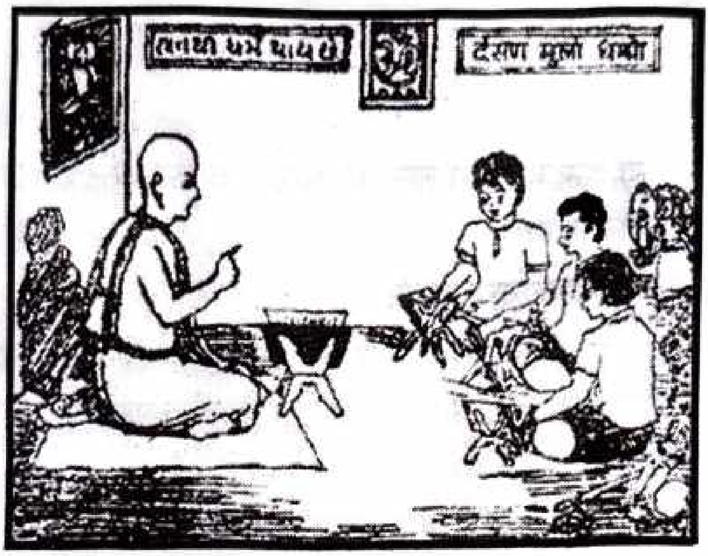

प्रश्न 1: महापाप किसे कहते हैं?

उत्तर: व्यसन ही महापाप है।

प्रश्न 2: व्यसन किसे कहते हैं?

उत्तर: जिन कार्यों को करने से भय अथवा लोक निंदा हो ऐसी उन बुरी आदतों को व्यसन कहते हैं।

प्रश्न 3: व्यसन कितने तथा कौन-कौन से हैं?

उत्तर: दोहा जुआ खेलना माँस मद्य, वेश्या गमन शिकार।
चोरी पर रमणी रमण, सातों व्यसन निवार।।

1. जुआ खेलना
2. माँस खाना
3. शराब पीना
4. वेश्या गमन
5. शिकार करना
6. चोरी करना
7. परस्त्री गमन करना।

ये सातों व्यसन प्रत्येक प्राणी को त्याग करना चाहिए।

प्रश्न 4: जुआ किसे कहते हैं?

उत्तर: हार-जीत से जो खेल पैसों की बाजी लगाकर खेले जाते हैं उसे जुआ कहते हैं।

जैसे ताश, चौपड़, सट्टा, छकड़ी, मटका, शतरंज, लॉटरी आदि।

प्रश्न 5: जुआ खेलने से क्या हानि होती है?

उत्तर: जुआ खेलने से आर्थिक क्षति, लोक निंदा की असह्य वेदना को सहना पड़ता है एवं धर्म ध्यान से शून्य तथा कलुषित परिणाम होने से परलोक में नरक आदि कुगतियों की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 6: जुआ खेलने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: जुआ खेलने में युधिष्ठिर आदि पाँच पांडव प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न 7: माँस किसे कहते हैं?

उत्तर: दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के प्राणियों के कलेवर (शरीर) आदि को माँस कहते हैं।

प्रश्न 8: माँस अभक्ष्य क्यों है?

उत्तर: माँस प्राणियों के रस, रूधिर आदि अपवित्र धातुओं से बना है तथा जिसका वह माँस है उसमें उसी जाति के असंख्य जीव प्रति समय उत्पन्न होते रहते हैं।

प्रश्न 9: माँस खाने से क्या हानि होती है?

उत्तर: माँस खाने में अहिंसा धर्म का विनाश तथा केंसर आदि रोग व परलोक में नरक आदि की तीव्र वेदना होती है।

प्रश्न 10: माँस खाने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: माँस खाने में बक राजा प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 11: मद्य किसे कहते हैं?

उत्तर: मद्य शराब को कहते हैं।

प्रश्न 12: शराब किसे कहते हैं?

उत्तर: अनेक सड़े-गले फलों के रसों से (एवं महुआ आदि को सड़ाकर) शराब बनाई जाती है। जिसके पीने से नशा उत्पन्न होता है। जिससे प्राणियों की बुद्धि नष्ट हो जाती है फिर उन्हें अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं होता है।

प्रश्न 13: शराब पीने से क्या हानि होती है?

उत्तर: शराब पीने से प्रथम तो अंनत जीवों की हिंसा होती है। दूसरा शराब

के साथ-साथ उन जीवों का कलेवर पीने में आ जाता है, जिससे माँस खाने का दोष लग जाता है। तीसरी बात उसके पीने से अच्छे-बुरे का ज्ञान समाप्त हो जाता है। जिससे वह कितनी बार अपनी माता को पत्नी और पत्नी को माँ समझने लगता है, हित-अहित का विवेक नहीं कर पाता तथा शराब पीने से स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है।

प्रश्न 14: शराब पीने से परलोक में क्या फल मिलता है?

उत्तर: शराब पीने से प्राणी नरक में जाता है, वहाँ पर ताँबे को अग्नि में पिघलाकर जबर्दस्ती पिलाया जाता है।

प्रश्न 15: शराब पीने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: शराब पीने में यादव लोग प्रसिद्ध हुये। जिनके कारण द्वारिका नगरी भस्म हो गई थी।

प्रश्न 16: वेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर: दुराचारिणी स्त्री को वेश्या कहते हैं। लोक में धन, पैसे के लिए जो स्त्री दुराचरण करती है उसे वेश्या कहा जाता है।

प्रश्न 17: वेश्या सेवन किसे कहते हैं?

उत्तर: दुराचारिणी स्त्रियों से सम्बन्ध, मेल-मिलाप रखना या उनसे गलत काम करना वेश्या सेवन कहलाता है।

प्रश्न 18: वेश्या सेवन से क्या क्या हानियाँ होती हैं?

उत्तर: वेश्या सेवन से धर्म का विनाश, लोक मर्यादा की समाप्ति, धन-सम्पत्ति की हानि तथा अनेक असाध्य रोग उत्पन्न होते हैं तथा प्रगट होने पर बेइज्जती (बदनामी, तिरस्कार) आदि का दुख जीवन भर भोगना पड़ता है।

प्रश्न 19: वेश्या सेवन से परलोक में क्या फल मिलता है?

उत्तर: वेश्या सेवन से परलोक में (नरक में) अग्नि से संतप्त, लोहमयी स्त्रियों से आलिंग्न आदि कराया जाता है। नारकी अपनी विक्रिया शक्ति से अनेक दुख देते हैं।

प्रश्न 20: वेश्या सेवन में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: वेश्या सेवन में सेठ पुत्र चारूदत्त प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 21: शिकार किसे कहते हैं?

उत्तर: खेल-खेल में अथवा माँस की इच्छा से पक्षियों या जानवरों को मारा जाता है, उसे शिकार कहते हैं।

प्रश्न 22: शिकार खेलने से क्या हानि है?

उत्तर: पहली बात तो शिकारियों के ह्रदय कर्कश होते हैं उनके ह्रदय में रंचमात्र भी दया नहीं होती। दूसरी बात शिकार से संस्कार इतने भंयकर/क्रूर हो जाते हैं कि फिर वह स्वयं के परिवार मोहल्ला अथवा स्वंय अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करता। जानवर भी अपना बदला शिकारियों से लेते देखे जाते हैं।

प्रश्न 23: शिकार से परलोक में क्या हानि होती है?

उत्तर: शिकार खेलने वाले निर्दयी प्राणी मरण कर नरक में जाते हैं तथा वे पशु-पक्षी जिनका कि शिकार किया था वे उन शिकारियों को बार-बार ताड़ना देते हैं।

प्रश्न 24: शिकार खेलने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: शिकार खेलने में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 25: चोरी किसे कहते हैं?

उत्तर: किसी की भूली हुई, पड़ी हुई या रखी हुई वस्तु को बिना पूछे ले लेना चोरी कहलाती है।

प्रश्न 26: चोरी करना त्याज्य क्यों है?

उत्तर: चोरी करने से सदा उसके पकड़े जाने का भय रहता है, दूसरा, जिसकी चोरी की जाती है उसकी आत्मा को महान संक्लेश होने से भाव हिंसा का दोष लगता है तथा पकड़े जाने से राजदण्ड (जेल) भोगना पड़ता है।

प्रश्न 27: चोरी करने से क्या हानि होती है?

उत्तर: चोरी करने से सारी लोक-प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। समस्त लोगों में विश्वास समाप्त हो जाता है। प्रत्येक जगह तिरस्कार प्राप्त होता है एवं सामाजिक तथा राजनैतिक दण्ड मिलता है और अन्त में जीवन भर बदनामी भोगनी पड़ती है।

प्रश्न 28: चोरी करने से परलोक में क्या हानि होती है?

उत्तर: चोरी करने से जिसकी चोरी की थी, परलोक में उसका कर्जा गधा, घोड़ा, ऊँट, बैल आदि तिर्यंच जीव बनकर चुकाना पड़ता है।

प्रश्न 29: चोरी करने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: चोरी करने में एक तापसी प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 30: परस्त्री किसे कहते हैं?

उत्तर: अपनी स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्री को परस्त्री कहते हैं।

प्रश्न 31: परस्त्री गमन किसे कहते हैं?

उत्तर: दूसरी स्त्रियों से गंदे व्यवहार रखने को परस्त्री गमन कहते हैं।

प्रश्न 32: परस्त्री गमन त्याज्य क्यों हैं?

उत्तर: परस्त्री गमन से सदाचार एवं लोक मर्यादा भंग होती है, भय बना रहता है। प्रकट होने से बुरी तरह मारपीट एवं नाम बदनाम हो जाता है।

प्रश्न 33: परस्त्री गमन से क्या हानि होती है?

उत्तर: कामांगों में अनेक तरह के गुप्त रोग उत्पन्न हो जाते हैं तथा शरीर एकदम निर्बल हो जाता है।

प्रश्न 34: परस्त्री गमन से परलोक में क्या हानि होती है?

उत्तर: परस्त्री गमन से नरक में असहनीय दुःखों को सहना पड़ता है।

प्रश्न 35: परस्त्री गमन में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर: परस्त्री गमन में लंका का राजा रावण प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 36: सप्त व्यसनों की जानकारी से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर: सप्त व्यसनों का लक्षण जानकर हमें यह शिक्षा मिलती है कि ये व्यसन संसार में दुःख के कारण हैं। इनसे सदा बचकर रहना चाहिए।

व्यसन

पाप नहीं ये महापाप हैं,
गिन लो पूरे सात हैं।
पहला जुआ खेलना है,
हारना और जीतना है।
दूसरा माँस खाना है,
मृत जीवों का बाना है।
तीसरा है शराब पीना,
सड़े-गले फल का रस लेना।
चौथा वेश्या सेवन है,
कर देती जो निर्धन है।
पाँचवा है शिकार खेलना,
मूक पशु की जान छीनना।
छटवा है चोरी करना,
बिन पूछे वस्तु का धरना।
सातवा है परस्त्री गमन,
सदाचार का करती हरण।
व्यसन इन्हें हम कहते हैं,
इनसे बच के रहते हैं।।

प्रश्नावली

1. वेश्या और परस्त्री में क्या अन्तर है?
2. शिकार व्यसन किस पाप के अन्तर्गत है?
3. हिंसा के भेद बताओ तथा इनका पूर्ण त्यागी कौन है?

अध्याय-5

अष्ट मूलगुण

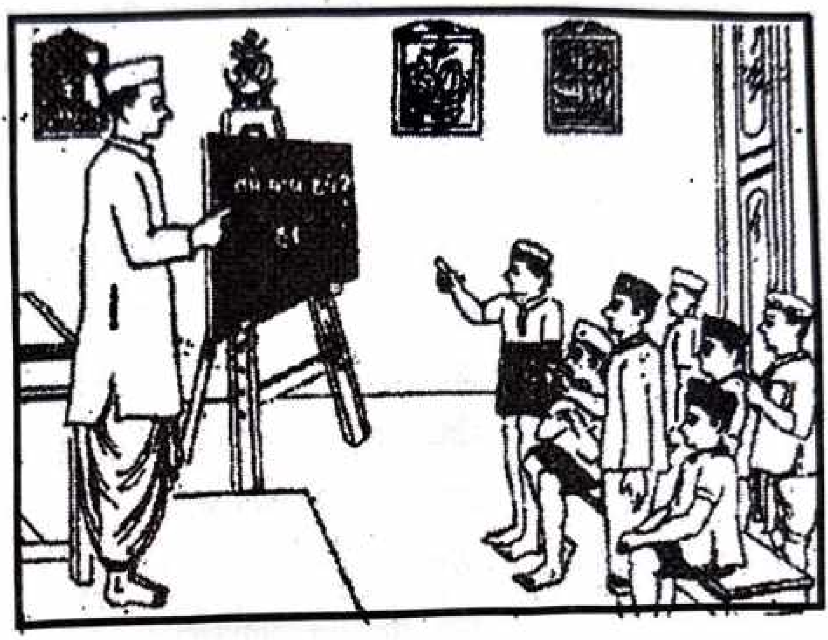

प्रश्न 1: श्रावक किसे कहते हैं?

उत्तरः जो श्रद्धावान, विवेकवान एवं क्रियावान हो तथा आत्म कल्याण की भावना रखता हो उसे श्रावक कहते हैं।

प्रश्न 2: श्रावक कौन हो सकता है?

उत्तरः जो अष्ट मूलगुण का धारी हो, वही श्रावक हो सकता है।

प्रश्न 3: मूलगुण किसे कहते हैं?

उत्तरः मूल का अर्थ है जड़। जिन गुणों के बिना श्रावक-धर्म का पालन नहीं हो सकता उन गुणों को मूलगुण कहते हैं।

प्रश्न 4: श्रावकों के मूलगुण कितने कौन-कौन से होते हैं?

उत्तरः श्रावकों के आठ मूलगुण होते हैं

1. पाँच उदम्बर फल खाने का त्याग।

2. मद्य (शराब) पीने का त्याग।

3. माँस भक्षण का त्याग।

4. मधु (शहद) खाने का त्याग।

5. रात्रि भोजन का त्याग।

6. अनछने जल का त्याग।

7. नित्य देव दर्शन करना।

8. जीवों पर दया करना।

प्रश्न 5: उदम्बर फल किसे कहते हैं?

उत्तर: जिन फलों में असंख्यात त्रस जीव होते हैं, उन्हें उदम्बर फल कहते हैं।

प्रश्न 6: उदम्बर फल कितने तथा कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर: उदम्बर फल पाँच प्रकार के होते हैं

1. बड़ फल (बरगद का फल)
2. पीपल फल
3. ऊमर फल
4. कठूमर फल
5. अंजीर फल

प्रश्न 7: यह आप कैसे जानते हैं कि इन फलों में त्रस जीव होते हैं?

उत्तर: जिस समय उक्त फलों को फोड़ा जाता है तब प्रत्यक्ष उड़ते हुये अनेक जीव दिखते हैं। इसके अतिरिक्त और भी यदि ऐसे फल हों जिनमें जीवराशि पाई जाए उन्हें भी त्यागना चाहिए।

प्रश्न 8: मद्य किसे कहते हैं तथा वह कैसे बनती है?

उत्तर: शराब को मद्य कहते हैं। जो गुड़, महुआ, अंगूर आदि अनेक फलों को सड़ाकर तैयार की जाती है। जिसमें असंख्यात त्रस-स्थावर जीवों का कलेवर (माँस) होता है।

प्रश्न 9: शराब त्याज्य क्यों है? तथा उससे हमको क्या हानि होती है?

उत्तर: शराब सड़ी-गली वस्तुओं से तैयार की जाती है। उसमें बहुत जीवों की हिंसा होती है। शराब की एक बूँद में सम्पूर्ण लोक के बराबर जीवराशि है इसलिये वह त्याज्य है एवं उसको पीने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है, बुद्धि नष्ट हो जाती है, जिससे श्रेष्ठ गुणों का विनाश एवं दुर्गुणों की वृद्धि होने लगती है, विश्वास एवं सम्मान गिरता है, पारिवारिक तंगी के साथ दुर्गति होती है, केन्सर जैसे रोगों का शिकारी होना पड़ता है, नरकों में तांबे को पिघलाकर पिलाया जाता है अतः शराब त्याज्य है।

प्रश्न 10: माँस किसे कहते हैं? तथा वह कैसे तैयार किया जाता है?

उत्तर: जीव के शरीर को माँस कहते हैं। पशु-पक्षियों को मारकर जो उसका कलेवर (शरीर) है उसे माँस कहते हैं। उसे निर्दयी लोग तैयार करते हैं।

प्रश्न 11: माँस त्याज्य क्यों है तथा उसके सेवन से क्या हानि होती है?

उत्तर: माँस की उत्पत्ति हिंसा के बिना सम्भव नहीं है। दूसरी बात, माँस बुरी वस्तु है। इसके खाने से व्यक्ति के समस्त सात्विक गुण समाप्त हो जाते हैं जिससे यह प्राणी बुरे से बुरे कार्य करने तक से नहीं हिचकिचाता। माँस खाने से परिणामों में दुष्टता, निर्दयता, क्रुरता आ जाती है तथा माँस से कैंसर जैसी अनेकों असाध्य बीमारियाँ हो जाती हैं। परलोक में असह्य वेदना भोगनी पड़ती है।

प्रश्न 12: मधु किसे कहते हैं तथा वह कैसे तैयार होती है?

उत्तर: शहद को मधु कहते हैं। मधु-मक्खियाँ फूलों से पराग ग्रहण कर उसे किसी वृक्ष पर या किसी मन्दिर आदि के कोने में एक छत्ता बनाकर उसमें वमन व बीट करती रहती हैं उसी को शहद कहते हैं। भील लोग उस छत्ते में आग लगाकर धुँआ करते हैं जिससे कुछ मक्खियाँ एवं उनके अण्डे जल जाते हैं फिर उस छत्ते को निचोड़कर शहद निकाला जाता है।

प्रश्न 13: मधु त्याज्य क्यों है तथा उसके सेवन से क्या हानि है?

उत्तर: मधु में असंख्य जीवों की उत्पत्ति होती है तथा उसके सेवन से उन जीवों की हिंसा होने से अहिंसा धर्म का लोप होता है। परिणामों में विकार भाव जागृत होता है तथा परलोक में नरक आदि कुगति होती है।

प्रश्न 14: एक बूँद प्रमाण शहद खाने से कितना पाप लगता है?

उत्तर: सात गाँवों के प्राणियों को जलाने से जितना पाप होता है उतना ही पाप एक बूँद शहद खाने में होता है।

प्रश्न 15: उक्त आठ वस्तुओं के त्याग में यदि एक दो कम हों तो क्या अष्टमूल-गुण पूर्ण कहे जा सकते हैं?

उत्तर: नहीं, अष्टमूलगुण में यदि एक भी कम रहे, तो उसे अष्टमूलगुण धारी नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 16: अष्टमूलगुण धारण करने से क्या लाभ होता है?

उत्तर: अष्टमूलगुण धारण करने से धर्म भावनाओं का विकास होता है।

जीवन सदाचारी, सुखी बनता है एवं परलोक में स्वर्ग, मोक्ष की सिद्धि कराता है। यह अष्टमूलगुण श्रावकाचार की आद्य भूमिका है।

प्रश्न 17: अष्टमूलगुण धारण किये बिना क्या आगे का चारित्र संभव है?

उत्तर: नहीं, अष्टमूलगुण के बिना श्रावकों के अन्य व्रत नहीं हो सकते।

प्रश्न 18: रात्रि भोजन का त्याग आवश्यक क्यों है?

उत्तर: सूर्य अस्त होते ही अनेक त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं और वे भोज्य पदार्थों पर बैठते हैं जिससे रात्रि में भोजन के साथ-साथ उक्त जीवों का भक्षण हो जाता है। इसलिये प्रथम तो जीव हिंसा होती है दूसरी बात माँस भक्षण का दोष लगता है।

प्रश्न 19: रात्रि भोजन करने से क्या हानि है?

उत्तर: रात्रि भोजन करने से अनेक अभक्ष्य पदार्थ सेवन में आ सकते हैं, इन्द्रिय-लालसा बढ़ती है। अपच होने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है और परलोक में नरक आदि गतियों की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 20: रात्रि भोजन त्याग से क्या लाभ होता है?

उत्तर: रात्रि भोजन त्याग से व्यक्ति दुराचार से बचकर सदाचार की ओर अग्रसर हो जीवन को व्रती बनाकर स्वर्ग, मोक्ष की सिद्धि कर लेता है। यही रात्रि भोजन त्याग का फल है।

प्रश्न 21: रात्रि भोजन का त्याग क्या तिर्यंच भी कर सकते हैं?

उत्तर: हाँ, तिर्यंच भी रात्रि भोजन का त्याग कर सकते हैं। सियार, सिंह, हाथी, गिद्ध आदि अनेक प्राणियों ने रात्रि भोजन का त्याग कर आत्म कल्याण किया। वर्तमान में भी अनेकों पशु-पक्षी रात्रि में न कुछ खाते हैं, न बोलते हैं।

प्रश्न 22: अनछना जल पीने का त्याग आवश्यक क्यों है तथा इससे क्या हानि होती है?

उत्तर: अनछना जल अंसख्य जीवों का प्रतिरूप है क्योंकि अनछने जल में असंख्य विषाक्त त्रस जीव होते हैं। ऐसा जल पीने से प्रथम तो उन जीवों की हिंसा होती है। दूसरी बात, अनेक मक्खी, मच्छर, मकड़ी आदि पानी में आ जावें तो उस जल से कण्ठ रोग, जलोदार, नारू, कोढ़ आदि रोग हो जाते हैं। कितनी बार तो ऐसा पानी प्राणघातक हो जाता है।

प्रश्न 23: अनछने जल त्याग से क्या लाभ है?

उत्तर: अनछने जल के त्याग से प्रथम लाभ तो यह होता है कि त्रस जीवों

की रक्षा होने से अहिंसा धर्म का पालन होता है। दूसरी बात-स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

प्रश्न 24: जल कैसे छन्ने से छानना चाहिए?

उत्तर: जल हमेशा मोटे तथा दोहरे कपड़े से छानना चाहिए। छानने वाला कपड़ा बर्तन के मुख से तीन गुना बड़ा होना चाहिए। जल छानने के बाद जीवानी को उसी कुँआ, बावड़ी में डालना चाहिए जहाँ से वह जल लाया गया हो।

प्रश्न 25: जल को जहाँ से लाये थे उसी कुँआ, बावड़ी में क्यों डालना चाहिए?

उत्तर: क्योंकि भिन्न-भिन्न कुँआ, बावड़ी आदि की जलवायु भिन्न-भिन्न होने से उसमें रहने वाले जीवों की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न होती है, अत: एक कुँआ, बावड़ी आदि का पानी दूसरे कुँआ, बावड़ी में डालने से उसमें रहने वाले जीव मर जाते हैं। अत: जीवानी उस ही कुँआ या बावड़ी आदि में डालना चाहिए।

कप्रश्न 26: अनछने जल में कितने जीव होते हैं?

उत्तर: अनछने जल में असंख्य त्रस जीव होते हैं।

प्रश्न 27: वैज्ञानिकों ने अनछने जल की एक बूँद में कितने जीव बताये हैं?

उत्तर: वैज्ञानिकों (कैप्टन सर्वोसवी) ने एक बूँद अनछने जल में 36450 त्रस जीव बतलाये हैं।

प्रश्न 28: छने हुये जल की मर्यादा कितनी है?

उत्तर: छने हुए जल की मर्यादा अंतर्मुहूर्त (48 मिनट के अन्दर का समय) प्रमाण है।

प्रश्न 29: क्या जल की मर्यादा अन्य प्रकार से भी है?

उत्तर: हाँ, जल की मर्यादा अन्य प्रकार से भी है

1. जल को छानकर यदि उसमें लवंग, इलायची आदि डाल दें जिससे उस जल का रूप, रस, गंध आदि बदल जाये। तब उस जल की मर्यादा 6 घण्टे हो जाती है।
2. छने जल को थोड़ा गरम कर देने से उसकी मर्यादा 12 घण्टे तक हो जाती है।
3. छने जल को उबाल देने पर उसकी मर्यादा 24 घण्टे तक हो जाती है।

प्रश्न 30: दया किसे कहते हैं?

उत्तर: किसी भी प्राणी को जरा भी कष्ट नहीं देना एवं उसे कोई कष्ट हो तो उसको दूर करने को दया कहते हैं।

प्रश्न 31: श्रावक और जैन में क्या अन्तर है?

उत्तर: श्रावक और जैन ये सामान्य रूप से एकार्थवाची हैं। श्रावक की ग्यारह श्रेणियाँ (दर्जे) हैं किन्तु 'जैन' शब्द धर्म अनुयायियों का सामान्य पहचान सूचक शब्द है।

प्रश्न 32: जैन शब्द को स्पष्ट करो?

उत्तर: जो जिनेन्द्र भगवान पर विश्वास करता हुआ उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलता है उसे जैन कहते हैं।

प्रश्न 33: जैन संज्ञा कहाँ से प्रारम्भ होती है?

उत्तर: सम्यग्दर्शन के साथ-साथ उपरोक्त अष्ट मूलगुणों को धारण करने की प्रतिज्ञा लेने पर ही जैन संज्ञा होती है।

प्रश्न 34: अष्ट मूलगुणों को धारण किये बिना क्या कोई व्यक्ति जैन कहलाने का अधिकारी है?

उत्तर: नहीं, अष्ट मूलगुण की प्रतिज्ञा का पालन किये बिना कोई भी जैन कहलाने का अधिकारी नहीं है। अतः हम सभी को अवश्य अष्ट मूलगुण धारण करना चाहिये।

प्रश्न 35: अष्ट मूलगुण किससे धारण करना चाहिये?

उत्तर: निर्ग्रन्थ गुरुओं से या अन्य त्यागी व्रती से। यदि उनका सान्निध्य नहीं मिल सके तो जिनेन्द्र प्रभु के समक्ष स्वयं ही प्रतिज्ञा ले लेनी चाहिए।

प्रश्न 36: प्रतिज्ञा किस प्रकार लेना चाहिए?

उत्तर: फल आदि हाथ में लेकर महाराज से प्रार्थना करना चाहिए कि हे महाराज! आज से मैं अष्ट मूलगुणों को धारण कर सच्चा जैन बन रहा हूँ। इस प्रकार प्रार्थना कर द्रव्य चढ़ाकर महाराज से आशीर्वाद ग्रहण कर कायोत्सर्ग करें तथा एक बार प्रतिज्ञा लेकर उसे बीच में नहीं छोड़ना चाहिए अन्यथा महान पाप का बन्ध होगा।

श्रावक के आठ मूलगुण

पाँच उदंबर फल न खाएँ,
मद्य मांँस मधु नहीं मंगाएँ।
रात्रि भोजन कर दें त्याग,
नित्य देवदर्शन हो याद।
काम न लें जल छने बिना,

सब जीवों कर करें दया।
अष्ट मूलगुण इनको कहते,
श्रावक इनके बिन न रहते।।

प्रश्नावली

1. पानी छानकर क्यों पीना चाहिए?
2. अनछना पानी पीने से क्या हानि होती है?
3. दया किसे कहते हैं?
4. उदम्बर फल कितने प्रकार के होते हैं?
5. शराब पीना क्यों त्याज्य है?
6. माँस खाने से क्या हानि होती है?
7. मधु (शहद) किसे कहते हैं इसका सेवन क्यों त्याज्य है?
8. अष्ट मूलगुण किससे धारण करना चाहिए?

मुनियों को देखते ही हृदय कमल खिल जाता है।
मुनियों को देखते ही मन प्रसन्नता से भर जाता है।
मुनियों के दर्शन ही रत्नत्रय के दर्शन हैं प्यारे बन्धुओ।
मुनियों को देखते ही विनय से मस्तक झुक जाता है।।

श्रद्धा से ही भक्ति सदा सच्ची होती है।
बिना विवेक की भक्ति सदा कच्ची होती है।।
भक्ति भी मोक्ष का एक द्वार है!
विनय युक्त भक्ति ही अच्छी होती है।।

गणचार्य श्री विरागसागरजी कृत मुक्तकांजलि से साभार

अध्याय-6

आलोचना पाठ

बंदों पाँचों परम-गुरु, चौबीसों जिनराज़।
कुरूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज।।1।।

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृत्ति काजा, तुम सरन लही जिनराजा।।2।।

इक वे ते चउ इंद्री वा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करूणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी।।3।।

समरंभ समारंभ आरंभ, मन वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकै, क्रोधादि चतुष्टय धरिकै।।4।।

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परिछेदन तैं।
तिनकी कहुँ कोलो कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी।।5।।

विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतै नहिं जाय कहीने।।6।।

कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया करि भीनी।
या विधि मिथ्यात्व भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो।।7।।

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर बनिता सों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीनों, पन पाप जु या विधि कीनो।।8।।

सरपस रसना घ्रानन को, दृग कान विषय सेवन को।
बहु करम किये मनमाने, कुछ न्याय अन्याय न जाने।।9।।

फल पंच उदम्बर खाये, मधु माँस मद्य चित चाये।
नहिं अष्ट मूल गुण धारे, सेये कुव्यसन दुखकारे।।10।।

दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निशदिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों-त्यों करि उदर भरायो।।11।।

अनंतानु जु बंधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये।।12।।

परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि त्रिवेद संयोग।
पनबीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम।।13।।

निद्रा वश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषयवन धायो, नानाविध विषफल खायो।।14।।

आहार विहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाई।।15।।

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकल्प उपजायो।
कछु सुध बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है।।16।।

मरजादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन-भिन अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये।।17।।

हा हा! मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करूणा नहीं लीनी।।18।।

पृथ्वी बहु खोद कराई, महलादिक जागा चिनाई।
पुनि बिन गाल्यों जल ढोल्यो, पंखातैं पवन बिलोल्यो।।19।।

हा हा! मैं अदयाचारी, बहु हरित काय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनंदा।।20।।

हा हा! परमाद बसाई, बिन देखे अग्नि जलाई।
तामध्य जीव जे आये, ते हू परलोक सिधाये।।21।।

बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाड़ू ले जागा बुहारी, चींटी आदिक जीव विदारी।।22।।

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।23।।

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि कुल बहुघात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये।।24।।

अन्नादिक शोध कराई, तामैंजु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारे धूप डराया।।25।।

पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहु आरंभ हिंसा साजै।
किये तिसनावश अघ भारी, करूणा नहिं रंच विचारी।।26।।

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी तैं कहिये न जाई।।27।।

ताको जु उदय अब आयो, नाना विध मोहि सतायो।
फल भुंजत जिय दुख पावैं, वचतैं कैसे करि गावैं।।28।।

तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है।।29।।

इक गाँव पति जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी।।30।।

द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीता-प्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुख मेटो अंतरजामी।।31।।

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद सम्हारो।
सब दोष रहित करि स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी।।32।।

इंद्रादिक पदवी नहिं चाँहू, विषयनि में नांहि लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे।।33।।

(दोहा)

दोष रहित जिनदेवजी, निजपद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ै, आनंद मंगल होय।।
अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनंद।।34।।

प्रश्नावली

1. आलोचना करने का क्या उद्देश्य है?
2. आलोचना किसके समक्ष की जाती है?
3. आलोचना पाठ में किन-किन बातों को बताया गया है?
4. पाठ के अन्त में भगवान से क्या प्रार्थना की गई है?

अध्याय-7

भगवान पार्श्वनाथ

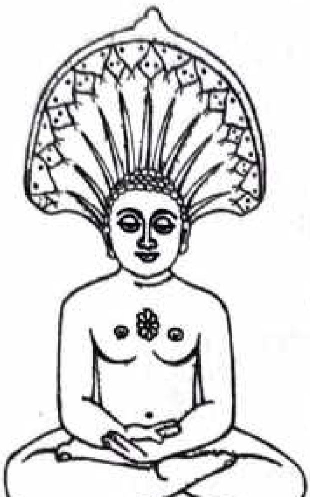

भगवान महावीर से 350 वर्ष पूर्व वाराणसी नगरी के राजा विश्वसेन के घर में पौष कृष्ण 11 को तेईसवे तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था। आपकी माता का नाम वामादेवी था। भगवान पार्श्वनाथ का वर्ण (शरीर का रंग) हरित (हरा), शरीर की ऊँचाई नौ हाथ तथा आयु 100 वर्ष थी।

आपके जन्म से पूर्व अनेक चमत्कारी घटनाएँ राज्य में घटित हुईं। जिससे समस्त नगरवासियों (प्रजानन) ने जान लिया कि कोई अतिशय पुण्यशाली महापुरूष जन्म लेने वाला है। आपके गर्भ से छह मास पूर्व ही कुबेर ने उत्तम सुवर्णमयी नगरी की रचना कर नाना प्रकार के रत्नों की वर्षा की। रत्नों की वृष्टि जन्म होने तक बराबर (गर्भ काल 9 मास तथा उससे पहले 6 मास कुल 15 मास तक) होती रही जिससे प्रजा की समस्त दरिद्रता दूर हो गई। जन्म के पश्चात् देवों ने सुमेरू पर्वत पर 1008 कलशों से आपका अभिषेक कर जन्मोत्सव मनाया।

जन्म से ही आप तीन ज्ञान के धारी थे, (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान)। जिससे भूत, भविष्य की घटनाएँ आपको मालूम हो जाती थीं। बाल्यकाल में ही आपके ज्ञान की विशेषताएँ देखने में आने लगीं। एक बार आप हाथी पर सवार होकर नगरी की शोभा देखते हुए गंगा तट पर आए। वहाँ पंचाग्नि तप तपते हुए एक तापसी पर आपकी दृष्टि पड़ी। वह तापसी मिथ्यादृष्टि (अज्ञानी) था तथा आपके प्रति कई जन्मों से बैर-भाव रखता था। उसकी तपश्चर्या और अज्ञानता भगवान के ज्ञान से छिपी नहीं रह सकी। भगवान ने अपने अवधिज्ञान से जाना कि तपस्वी जिन लकड़ियों को जला रहा है उसमें एक नाग युगल भी जल रहा है। यह स्थिति देख करूणाचित्त भगवान तपस्वी के पास जाकर बोले तपस्विन्! तुम जिस तप को तप रहे हो वह सब कुतप है, हिंसाजन्य है। इन लकड़ियों के

बीच नाग युगल जल रहे हैं। मैं अपने अवधिज्ञान से स्पष्ट देख रहा हूँ। तुम इन जीवों की रक्षा करो।

यह सुनकर तपस्वी क्रोधित होकर बोला तेरी थोथी बातों से कुछ नहीं होने वाला। ऐसे अवधिज्ञानी यहाँ पर कई आते रहे हैं। तब बालक पार्श्व ने कहा तापसी! मेरे सत्य ज्ञान की परीक्षा इसी समय इन लकड़ियों को चीरने से हो जाएगी। यह सुन क्रोधित तापसी ने ज्यों ही लकड़ियों को चीरा तो उसमें से अर्धमृतक तड़पते नाग-नागिन निकल पड़े। सभी के सामने भगवान के ज्ञान की प्रशंसा होने लगी। इससे तापसी ने अपने आप को बहुत अपमानित सा महसूस किया तथा मन ही मन क्रोधित हुआ। भगवान पार्श्वनाथ ने तड़पते नाग युगल का अन्त जानकर शीघ्र णमोकार मंत्र सुनाया तथा उन्हें व्रत अंगीकार कराये। जिसके प्रभाव से वे नाग युगल भवनवासी देवों के अधिपति धरणेन्द्र पद्मावती हुए। इसी प्रकार बालक पार्श्वनाथ के जीवन की अनेक घटनाएँ हैं। वह तापसी (कमठ) भी मरकर संवर नामक व्यन्तर देव हुआ।

भगवान् पार्श्वनाथ बाल्यकाल से ही संसार के माया जाल को अच्छी तरह से जानते थे। जीवनपर्यन्त आपने विवाह नहीं किया जिससे आप बाल ब्राह्मचारी कहलाये। आत्म कल्याण की भावना से आपको राजमहल के वैभव, बंधन से प्रतीत होते थे और आप निरन्तर उन सब परिग्रहों से मुक्त होकर जिन दीक्षा की चाह में रहने लगे। फिर एक दिन आपको जाति स्मरण हो जाने से वैराग्य हो गया। आपने सब परिग्रह छोड़कर निर्ग्रन्थ वीतरागी मुद्रा धारण कर ली। केशलोंच कर समता भावों से ध्यान में लीन हो गये। घोर तपश्चरण करने लगे। इस समय आपने अनेक उपसर्गों को जीता।

एक बार आप जब घोर तपश्चर्या में लीन थे उसी समय वह तापसी का जीव कमठ नाम का असुर आया और आपको देखकर बैर-भाव विचार कर अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसने उसी समय अपना विकराल रूप बनाकर महान् उपसर्ग किया किन्तु भगवान रंचमात्र भी तपस्या से नहीं डिगे।

उसी समय धरणेन्द्र पद्मावती का आसन कम्पायमान हुआ और प्रभु पर उपसर्ग जानकर वे शीघ्र आए। पद्मावती देवी ने भगवान को उठाकर अपने सिर पर बिठा लिया तथा धरणेन्द्र ने विकराल सर्प फण बनाकर भगवान के सिर को ढक लिया।

इस प्रकार धरणेन्द्र पद्मावती ने भगवान के ऊपर आये उपसर्ग को टाला। भगवान ध्यान में आरूढ़ रहे तथा किंचित नहीं डिगे। इस प्रकार उपसर्ग को जीतकर भगवान ने सभी कर्मों को नष्ट कर केवल ज्ञान प्राप्त किया। देवों ने आकर आपकी स्तुति की। भगवान का अतिशय देखकर कमठ को भी बहुत आश्चर्य हुआ और उसने बारम्बार अपने दुष्कर्म की निन्दा करते हुए प्रभु से क्षमायाचना की।

केवलज्ञान होने के बाद भगवान की देशना प्रारंभ हुई। उन्होंने संसार के दुःखों से छूटने का मंगलकर धर्ममार्ग अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, दया, दान का उपदेश देकर अनेक भव्य जीवों को संयम मार्ग पर लगाकर उनका कल्याण किया। धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है। ऐसे धर्म को हम नमस्कार करते हैं। अतः भव्यजनों को धर्म मार्ग पर चलना चाहिए।

भगवान पार्श्वनाथ

हम सबके भगवान पारस
जन्मे थे जो नगर बनारस।
फादर जिनके अश्वेसन,
वामादेवी मदर्स नेम।
नाग-नागिनी को मंत्र सुनाया,
देव और देवी उन्हें बनाया।
दीक्षा ले तप करते वन में,
बैर जगा कमठ के मन में।

अग्नि पत्थर तब बरसाये,
लेकिन भगवान न घबराये।
तब धरणेन्द्र, पदमावती आये,
उपसर्गों से उन्हें बचाये।
केवलज्ञान प्रभु ने पाया,
कमठ बहुत-बहुत पछताया।
सम्मेदशिखर से मोक्ष पधारे,
जय पारस की भक्त पुकारे।।

प्रश्नावली

1. भगवान पार्श्वमान का जन्म कहाँ और किसके यहाँ हुआ था?
2. जन्म से ही भगवान में क्या विशेषताएँ थी?
3. देवों ने आपका जन्मोत्सव कैसे मनाया?
4. देवों ने कितने दिन तक रत्नों की वर्षा की?
5. तापसी से भगवान ने क्या कहा, विस्तार से बतावें।
6. भगवान पर उपसर्ग किसने किया तथा उसका निवारण किसने किया?
7. भगवान ने निर्वाण कहाँ से प्राप्त किया तथा किस प्रकार प्राप्त किया?

अध्याय-8

कषाय

प्रश्न 1: कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: जो आत्मा को कृषे उसे कषाय कहते हैं। जैसे हल से खेत जोते जाते हैं उसी तरह कषाय आत्मा को कृषती है।

प्रश्न 2: कषाय के मुख्य कितने भेद हैं?

उत्तर: कषाय के मुख्य भेद चार हैं क्रोध, मान, माया, लोभ। विशेष रूप से भेद करने पर दो भेद, सोलह भेद तथा 25 भेद तक हो जाते हैं।

प्रश्न 3: कषाय के भेद स्पष्ट रूप से समझाइए?

उत्तर: चार भेद अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन।
दो भेद कषाय और नोकषाय।
अनुंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ।

अप्रत्याख्यान	क्रोध, मान, माया, लोभ।
प्रत्याख्यान	क्रोध, मान, माया, लोभ।
संज्वलन	क्रोध, मान, माया, लोभ।

नोकषाय के नौ भेद हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरूषवेद, नंपुसकवेद।

प्रश्न 4: कषायों से जीव क्या करता है?

उत्तर: कषायों से जीव पाप करने में प्रवृत्त हो जाता है। वह स्वयं भी कर सकता है, दूसरों को भी प्रेरित कर सकता है, करने वालों की प्रशंसा कर सकता है। इसी को कृत, कारित, अनुमोदना भी कहते हैं। कषाय की चेष्टा मन से, वचन से, काय से स्पष्ट समझ में आ जाती है। समरंभ, समारंभ, आरंभ इस क्रम से कषाय का प्रकटीकरण होता है।

प्रश्न 5: क्रोध कषाय का अर्थ बताओ?

उत्तर: गुस्सा करने को क्रोध कहते हैं।

प्रश्न 6: मान कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: अभिमान (घमण्ड) को मान कषाय कहते हैं।

प्रश्न 7: माया कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: छल-कपट को माया कषाय कहते हैं।

प्रश्न 8: लोभ कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: लालच को लोभ कषाय कहते हैं।

प्रश्न 9: कषायों से क्या हानि है?

उत्तर: कषाय करने से हमें प्रत्यक्ष में नुकसान उठाना पड़ता है। आपस में बैर बँधता है। समाज में नीचा देखना पड़ता है तथा इस भव में और परभव में आत्मा को दारुण दुख सहने पड़ते हैं।

प्रश्न 10: कषायों में कौन-कौन प्रसिद्ध हुए?

उत्तर:	क्रोध कषाय में	द्वीपायन मुनि।
	मान कषाय में	रावण।
	माया कषाय में	मृदुमति मुनि।
	लोभ कषाय में	लुब्धदत्त सेठ।

प्रश्न 11: कौन-सी कषाय किस चारित्र का घात करती है?

उत्तर:	अनंतानुबंधी कषाय	सम्यक्त्व एवं सम्यक्त्वाचरण चारित्र का
	अप्रत्यख्यानावरण कषाय	देश चारित्र का
	प्रत्यख्यानावरण कषाय	सकल चारित्र का
	संज्वलन कषाय	यथाख्यात चारित्र का घात करती है।

प्रश्न 12: अनंतानुबंधी कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: जो कषाय भव्यों के सम्यक्त्व एवं सम्यक्त्वाचरण चारित्र का घात करती है, उसे अनंतानुबंधी कषाय कहते हैं।

प्रश्न 13: अप्रत्याख्यान कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: अप्रत्याख्यान कषाय से भी आत्मा का घात होता है परन्तु उतना नहीं, जितना अनंतानुबंधी से होता है। इससे देश चारित्र जैसे अणुव्रत के भी व्रत धारण नहीं हो पाते। इसलिये उसे अप्रत्याख्यान कषाय कहते हैं।

प्रश्न 14: प्रत्याख्यान कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: प्रत्याख्यान कषाय से व्यक्ति मुनिव्रत धारण नहीं कर पाता अर्थात् यह कषाय आत्मा के सामायिक चारित्र का घात करती है। इसलिये इसे प्रत्याख्यान कषाय कहते हैं। यह ऊपर कही गई कषायों से कुछ कम घातक है।

प्रश्न 15: संज्वलन कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: जो कषाय आत्मा के यथाख्यात चारित्र का घात करे, वह संज्वलन कषाय है इसमें जीवन धीमी आँच में तपता सा रहता है। यह कषाय अधिक घातक नहीं परन्तु इसके रहने से यथाख्यात चारित्र प्रकट नहीं हो पाता।

प्रश्न 16: ये कषाएँ कितने समय तक रह सकती हैं?

उत्तर: अनंतानुबंधी अंनतकाल तक, अप्रत्याख्यान छह मास तक, प्रत्याख्यान 15 दिन तक तथा संज्वलन अन्तर्मुहूर्त तक अधिक से अधिक रह सकती है।

प्रश्न 17: अन्तर्मुहर्त कितना होता है?

उत्तर: मुहुर्त का प्रमाण 48 मिनट है। इसके अन्दर का समय ही अन्तर्मुहर्त है।

प्रश्न 18: नोकषाय किसे कहते हैं?

उत्तर: नोकषाय का अर्थ है किंचित कषाय (कुछ कषाय)। कषाय से कुछ कम घातक होने से इसे नोकषाय कहते हैं।

प्रश्न 19: नोकषाय के कितने भेद हैं? अर्थ सहित बतायें।

उत्तर: नोकषाय के नौ भेद हैं

हास्य-हँसी करना, रति-प्रेम करना, अरति-प्रीति नहीं करना, भय-डरना, शोक-दुखी होना, जुगुप्सा-घृणा करना, स्त्रीवेद-पुरूष से संसर्ग की इच्छा करना, पुरूषवेद-स्त्री से संसर्ग की इच्छा करना, नपुंसकवेद-स्त्री-पुरूष दोनो में रमने की इच्छा करना।

प्रश्न 20: कषाय किस प्रकार जीतना चाहिये?

उत्तर: कषाय को निम्न प्रकार से जीतना चाहिए

क्षमा से क्रोध को, नम्रता से मान को, सरलता से माया को, दान से लोभ को जीतना चाहिए।

प्रश्न 21: बढ़ती हुई कषायों को जीतने के क्या कुछ और भी उपाय हैं?

उत्तर: विषय परिवर्तन, स्थान परिवर्तन, काल परिवर्तन, मौन धारण।

1. जिस चर्चा से कषाय बढ़ रही हो उसे बदलकर अन्य विषय पर चर्चा करने लगें।
2. स्थान छोड़कर अन्यत्र चले जाएँ।
3. कषाय न बढ़े इसलिये घड़ी, घण्टा, दिन, दो दिन का अन्तर डाल दें, जिसमें भावों का उद्वेग स्वतः शान्त हो जाए।
4. सबसे अच्छा उपाय है मौन धारण कर लें। इससे सामने वाला व्यक्ति स्वतः ही शान्त हो जाएगा।

प्रश्न 22: सामने वाला बोले और हम शांत रहें, यह कैसे संभव है?

उत्तर: सामने वाला कब तक बोलेगा? हम उत्तर नहीं देंगे तो वह बोलते-बोलते थक जायेगा। फिर स्वतः चुप होकर चला जायेगा। हमें सिर्फ अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए। ज्यादा बात बढ़ाने से मारपीट, झगड़ा यहाँ तक की प्राणघात भी संभव है। अतः मौन रहने से कषाय मन्द पड़ जायेगी और शान्ति बनी रहेगी।

कषाय

आत्मा को कृषती है,
कषाय ऐसी रस्सी है।
पहली क्रोध कषाय है,
जिसको गुस्सा कहते हैं।
दूसरी है मान कषाय,

गर्व में अकड़े रहते हैं।
तीसरी है माया कषाय,
छल-कपट जो करवाये।

चौथी है ये लोभ कषाय,
जो पापों का बाप कहाये।
क्रोध छोड़ो क्षमा को देकर,
मान छोड़ो विनय से भरकर।
सरलता से माया जीतें।
संतोषी लोभ से रीते।।
लोभ भगाये दान त्याग को।
अगर दुखों से तुमको बचना,
चार कषायें जल्दी तजना।।

प्रश्नावली

1. कषाय से तुम क्या अर्थ समझे? भेद सहित संक्षेप में बताओ।
2. कषायों से क्या हानि है? इनका काल (समय सीमा) भी बताओ।
3. कषाय को जीतने के लिये हमें क्या मार्ग अपनाना चाहिए?
4. तुम्हें कौन सी कषाय करना अच्छा लगता है और क्यों?

क्षमा से क्रोध को, नम्रता से मान को, सरलता से माया को, दान से लोभ को जीतना चाहिए।

प्रश्न 21: बढ़ती हुई कषायों को जीतने के क्या कुछ और भी उपाय हैं?

उत्तर: विषय परिवर्तन, स्थान परिवर्तन, काल परिवर्तन, मौन धारण।

1. जिस चर्चा से कषाय बढ़ रही हो उसे बदलकर अन्य विषय पर चर्चा करने लगें।
2. स्थान छोड़कर अन्यत्र चले जाएँ।
3. कषाय न बढ़े इसलिये घड़ी, घण्टा, दिन, दो दिन का अन्तर डाल दें, जिसमें भावों का उद्वेग स्वत: शान्त हो जाए।
4. सबसे अच्छा उपाय है मौन धारण कर लें। इससे सामने वाला व्यक्ति स्वत: ही शान्त हो जाएगा।

प्रश्न 22: सामने वाला बोले और हम शांत रहें, यह कैसे संभव है?

उत्तर: सामने वाला कब तक बोलेगा? हम उत्तर नहीं देंगे तो वह बोलते-बोलते थक जायेगा। फिर स्वत: चुप होकर चला जायेगा। हमें सिर्फ अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए। ज्यादा बात बढ़ाने से मारपीट, झगड़ा यहाँ तक की प्राणघात भी संभव है। अत: मौन रहने से कषाय मन्द पड़ जायेगी और शान्ति बनी रहेगी।

कषाय

आत्मा को कृषती है,
कषाय ऐसी रस्सी है।
पहली क्रोध कषाय है,
जिसको गुस्सा कहते हैं।
दूसरी है मान कषाय,

गर्व में अकड़े रहते हैं।
तीसरी है माया कषाय,
छल-कपट जो करवाये।

चौथी है ये लोभ कषाय,
जो पापों का बाप कहाये।
क्रोध छोड़ो क्षमा को देकर,
मान छोड़ो विनय से भरकर।
सरलता से माया जीतें।
संतोषी लोभ से रीते।।
लोभ भगाये दान त्याग को।
अगर दुखों से तुमको बचना,
चार कषायें जल्दी तजना।।

प्रश्नावली

1. कषाय से तुम क्या अर्थ समझे? भेद सहित संक्षेप में बताओ।
2. कषायों से क्या हानि है? इनका काल (समय सीमा) भी बताओ।
3. कषाय को जीतने के लिये हमें क्या मार्ग अपनाना चाहिए?
4. तुम्हें कौन सी कषाय करना अच्छा लगता है और क्यों?

अध्याय-9

देव दर्शन

प्रश्न 1: जिन मन्दिर किसे कहते हैं?

उत्तर: जिसमें जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति हो उसे जिन मन्दिर कहते हैं।

प्रश्न 2: जिन चैत्यालय किसे कहते हैं?

उत्तर: चैत्य का अर्थ है प्रतिमा (मूर्ति), आलय का अर्थ है स्थान। जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति जहाँ विराजमान हो, उसे जिन चैत्यालय कहते हैं।

प्रश्न 3: जिन मन्दिर या चैत्यालय किसलिए होते हैं?

उत्तर: जिन मन्दिर या चैत्यालय इसलिये होते हैं, ताकि भव्य प्राणी दर्शन कर आत्म कल्याण कर सकें।

प्रश्न 4: मंदिर में जिनेन्द्र मूर्ति की ही स्थापना क्यों की जाती है?

उत्तर: जिन मूर्ति वीतरागता की द्योतक है। उसके दर्शन-पूजन से हमारे भाव भी निर्मल हो जाते हैं तथा आत्म कल्याण होता है।

प्रश्न 5: दर्शन का क्या अर्थ होता है?

उत्तर: दर्शन का अर्थ भक्ति भावपूर्ण वीतराग भगवान की मूर्ति को नमस्कार करना है।

प्रश्न 6: जिन दर्शन अथवा देव दर्शन का अर्थ बताओ?

उत्तर: जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति में उनके असली स्वरूप को देखना, भक्ति करना तथा उनके जैसे बनने की भावना करने को जिन दर्शन कहते हैं और इसे ही देव दर्शन कहते हैं।

प्रश्न 7: देव दर्शन क्यों करना चाहिए?

उत्तर: आत्म कल्याण एवं जीवन में शान्ति प्राप्ति के लिये देव दर्शन नित्य अवश्य करना चाहिए।

प्रश्न 8: देव दर्शन क्यों आवश्यक है?

उत्तर: क्योंकि हम संसारी प्राणी हैं। संसारवर्द्धक (संसार को बढ़ाने वाले) नाना तरह के कार्यों में इतने उलझे रहते हैं कि आत्म शान्ति की एक श्वांस तक नहीं मिल पाती तथा साध्य-सिद्धि का किंचित भी स्मरण नहीं रह पाता कि मैं आप जैसा कब बनूँ। यह भी देव दर्शन का मुख्य लक्ष्य है इसे हम भूल न जायें। अतः उक्त दोनों बातों की सफलता के लिए जिन दर्शन करना परमावश्यक है।

प्रश्न 9: जिन दर्शन कब और कितनी बार करना चाहिए?

उत्तर: प्रातः स्नानादिक के बाद कुछ भी खाये-पिये बिना जिन दर्शन करना चाहिए तथा कितने भी बार दर्शन कर सकते हैं।

प्रश्न 10: प्रातः काल जिन दर्शन करने की बात पर जोर क्यों दिया?

उत्तर: प्रातः काल हमारा उपयोग निर्मल विशुद्ध रहता है। उस समय स्मरण की गयी बात जल्दी समझ में आ जाती है। उसे फिर शीघ्र भूल नहीं सकते। प्रभात में उपयोग की धारा ठीक रहती है जो दिन भर अपना काम करती है। उस समय यदि क्रोध आ जाए तो सारा दिन लड़ाई-झगड़ों में ही बीतेगा और यदि उस समय दर्शन, पूजन, जाप आदि करें तो सारा दिन प्रसन्तापूर्वक, मंगलमय बीतता है। अतः प्रातःकाल अवश्य दर्शन करना चाहिए।

प्रश्न 11: कुछ भी खाये-पिये बगैर देव दर्शन क्यों करना चाहिए?

उत्तर: यह विनय तथा भक्तिसूचक है। क्योंकि भोजन भगवान से बढ़कर नहीं है। जितनी कीमत भगवान की है उतनी भोजन की नहीं है यही कारण है कि बिना कुछ खाये हुए भगवान के दर्शन करना चाहिये। भोजन करके भगवान का स्मरण करना उचित नहीं अन्यथा प्रमाद-आलस्य आता है।

प्रश्न 12: देव दर्शन को जाने से पूर्व किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर: तीन बातों का ध्यान चाहिए

1. स्नान करके शुद्ध धुले वस्त्र पहनकर जाएँ।
2. मुख शुद्धि करके जाएँ।
3. अक्षत, फल आदि लेकर जाएँ।

प्रश्न 13: रास्ते में चलते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर: तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए

1. मौन होकर चलें।
2. नीचे देखकर चलें।
3. मन ही मन णमोकार मंत्र या अन्य स्तुति पाठ बोलते हुए चलें।

प्रश्न 14: मन्दिर जी के दरवाजे पर कितनी बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर: तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए

1. जूते, चप्पल तथा चमड़े की अन्य वस्तुओं को बाहर रख दें।
2. पैर धोकर ही प्रवेश करें।
3. यदि लौंग आदि खाई हो तो छने हुए स्वच्छ जल से कुल्ला करें।

प्रश्न 15: जिन मन्दिर में प्रवेश करते समय क्या बोलना चाहिए?

उत्तर:
1. ऊँ जय-जय-जय बोलें।
2. नि:सही! नि:सही! नि:सही! बोलें तथा
3. नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु! बोलें।

प्रश्न 16: ऊँ जय जय जय बोलते समय क्या करना चाहिए?

उत्तर: ऊँ जय जय जय बोलने के साथ-साथ तीन बार घण्टी बजाना चाहिए।

प्रश्न 17: तीन ही बार घन्टी क्यों बजाना चाहिए?

उत्तर: सच्चे देव, शस्त्र, गुरु तीन परम रत्न हैं। उनके स्मरण हेतु वाद्य ध्वनिपूर्वक प्रत्येक की जय के ध्येय से तीन बार घन्टी बजाना चाहिए।

प्रश्न 18: घन्टी कैसे बजाना चाहिये?

उत्तर: घन्टी इस प्रकार बजाना चाहिए कि किसी की भी धर्म साधना में कोई बाधा न हो। अर्थात् ध्वनि अधिक तीव्र न हो।

प्रश्न 19: नि:सही बोलने में क्या कुछ रहस्य है?

उत्तर: हाँ, यह स्थान देवाधिदेव अर्हंत प्रभु का है। यहाँ पर देव तक उनके

दर्शन-पूजन के लिए आते हैं किन्तु वे हमें दिखते नहीं हैं। यदि यहाँ पर कोई देव या देवी हों तो हमारे लिये स्थान छोड़ दें। हम दर्शन-पूजन करना चाहते हैं। अतः निर्बाध स्थान प्राप्ति के लिये निःसही का उच्चारण तीन बार करना चाहिए।

प्रश्न 20: नमोस्तु के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तरः णमोकार मंत्र आदि बोलते हुए मुख्य स्थान (मन्दिर, वेदी) तक पहुँच कर सर्वप्रथम तीन प्रदक्षिणा लगाना चाहिए।

प्रश्न 21: प्रदक्षिणा कैसे लगाना चाहिए?

उत्तरः अपने दाहिने हाथ से बाएँ हाथ की ओर प्रदक्षिणा लगाना चाहिए अथवा वेदी के दाहिने ओर से घूमते हुए तीन प्रदक्षिणा लगाना चाहिए।

प्रश्न 22: प्रदक्षिणा तीन ही क्यों लगाना चाहिए?

उत्तरः मनशुद्धि, वचनशुद्धि, काययुद्धि से पूर्ण शुद्ध होकर आया हूँ अथवा जन्म, जरा (बुढ़ापा), मृत्यु (मरण) को नष्ट करने के लिए तथा रत्नत्रय की प्राप्ति के लिए तीन प्रदक्षिपा लगाना चाहिए।

प्रश्न 23: अधिक से अधिक कितनी प्रदक्षिणा लगाना चाहिए?

उत्तरः इसका कोई प्रमाण नहीं है अर्थात चाहे जितनी प्रदक्षिणा लगा सकते हैं। जैसे 3, 5, 7, 11, 21, 108 आदि।

प्रश्न 24: प्रदक्षिणा लगाने के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तरः निम्नांकित श्लोक बोलते हुए पाँच ढेरी (पुंज) से चावल चढाएँ।

श्लोक उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल गानरवाकुलेः जिन गृहे जिननाथमहं यजे।।

ऊँ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्न 25: पाँच ही पुंज चढ़ाने का क्या अर्थ है?

उत्तरः क्योंकि परमेष्ठी पाँच होते हैं अतः उन सभी के ध्येय से पाँच पुंज चढ़ाना चाहिए। तदंनतर नमस्कार करें।

प्रश्न 26: नमस्कार किसे किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तरः सच्चे देव, शास्त्र, गुरु को नमस्कार हेतु महिलाओं के लिये चाहिए किं वे सदा गवासन से ही नमस्कार करें। पुरूष वर्ग को गवासन, साष्टांग, पंचांग आदि आसनों से नमस्कार करना चाहिए। तदनंतर स्तुति पाठ पढ़कर कायोत्सर्ग करना चाहिए।

प्रश्न 27: कायोत्सर्ग किसे कहते हैं?

उत्तर: काय में ममत्व नहीं रखना कायोत्सर्ग है अर्थात जब तक नौ बार णमोकार मंत्र नहीं पढ़ लें तब तक शरीर आदि में ममत्व के त्याग को कायोत्सर्ग कहते हैं।

प्रश्न 28: कायोत्सर्ग कैसे और कहाँ करना चाहिए?

उत्तर: दोनों नेत्रों को बन्द कर दोनों हाथों को नीचे करना चाहिए तथा पैरों में चार अंगुल का अंतर करके उक्त समय तक मन वचन काय को स्थिर रखें। इसे भगवान के समक्ष तथा दीवाल आदि के पास जाकर करें, ताकि किसी अन्य दर्शनार्थी को बाधा न होवे। बैठकर भी कायोत्सर्ग कर सकते हैं।

प्रश्न 29: जिनवाणी के समक्ष कितनी ढेरी से पुंज चढ़ाना चाहिए तथा क्यों चढ़ाना चाहिए?

उत्तर: चार ढेरी से पुंज चढ़ाना चाहिए, क्योंकि समस्त जिनवाणी चार अनुयोग रूप है प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग तथा द्रव्यानुयोग। इनका यथाक्रम से स्वाध्याय भी करें। तदंनतर गुरु के समक्ष पहुँचें।

प्रश्न 30: गुरु के समक्ष कितनी ढेरी से पुंज चढ़ाना तथा क्यों चढ़ाना चाहिए?

उत्तर: तीन ढेरी से पुंज चढ़ाना चाहिए, क्योंकि साधु परमेष्ठी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र से युक्त होते हैं। अतः प्रत्येक गुण के ध्येय से तीन ढेरी से पुंज चढ़ाना चाहिए। तंदनतर कम से कम णमोकार मंत्र की एक माला फेरना चाहिए।

प्रश्न 31: पुंज किसे कहते हैं?

उत्तर: चढ़ाने योग्य वस्तु (चावल, फलादि) के समूह को पुंज कहते हैं।

प्रश्न 32: मन्दिर जी से लौटते समय क्या करना चाहिए?

उत्तर: देव शास्त्र गुरु को पुनः नमस्कार करके अथवा जो अपने समक्ष हों उन्हें नमस्कार करके अस्सही-अस्सही का उच्चारण करते हुए मन्दिर जी से निकलना चाहिए।

प्रश्न 33: अस्सही का क्या अर्थ है?

उत्तर: जिन देवी देवताओं ने हमें दर्शनार्थ स्थान दिया था वे सब अपने-अपने स्थान पर आ जाएँ। अब हम जा रहे हैं।

प्रश्न 34: तीन बार अस्सही क्यों बोलना चाहिए?

उत्तर: तीनों काल (भूतकाल, भविष्य काल, वर्तमान काल) विषयक देवी देवताओं के उद्देश्य से तीन बार बोलना चाहिए।

प्रश्न 35: अस्सही अस्सही अस्सही का उच्चारण क्यों आवश्यक है?

उत्तर: क्योंकि जिस प्रकार जिन देवी-देवताओं से हमने स्थान की याचना की थी उसी प्रकार उन्हें उन-उन स्थलों को वापिस कर देना हमारा कर्तव्य है।

प्रश्न 36: यदि अस्सही अस्सही नहीं बोलें तो, क्या हानि हो सकती है?

उत्तर: वह देव कब तक तुम्हारी इन्तजारी करेगा। कार्य पूर्ण होने के बाद भी यदि आपने उसका स्थान वापिस नहीं किया तो, हो सकता है कि वह तुम्हारे ऊपर क्रुद्ध होकर आक्रमण कर दें। अतः अस्सही अस्सही अस्सही अवश्य बोलना चाहिए।

प्रश्न 37: लौटते समय कैसी भावना भाना चाहिए?

उत्तर: "भूयात् पुनर्दर्शनं" हे भगवान! पुनः आपके पुनीत दर्शन प्राप्त हों तथा भव-भव में आपके दर्शन मिलते ही रहें, ऐसी भावना भाना चाहिए।

मन्दिर जाना

मन्दिर जाना, मन्दिर जाना,
दर्शन करके ही कुछ खाना।
नहा धोकर हो गए तैयार,
द्रव्य हाथ में शानदार।
ऊँ जय जय जय, निःसही-3
नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु प्रवेश कर कही।
घण्टा बजाया तीन बार,
देव-शास्त्र-गुरु की जयकार।
दी वेदी की तीन परिक्रमा,
मन-वच-तन शुद्ध है अपना।

पाँच ढेरी से पुंज चढ़ायें,
पंच परमेष्ठी को सिर नायें।
चार ढेरी से पुंज चढ़ायें,
चार अनुयोगों को ध्यायें।
तीन ढेरी से पुंज चढ़ाये,
गुरु रत्नत्रयवान कहाये।
इसके बाद किया नमन,
अस्सही बोल के निकले हम।
फिर से भगवन् हमें बुलाएँ,
जाते-जाते कहते जाएँ।

प्रश्नावली

1. जिन मन्दिर और चैत्यालय में क्या अन्तर है?
2. देव दर्शन की आवश्यकता क्यों है? विस्तार से बताओ।
3. मन्दिर जाने की तथा देव दर्शन की विधि बताइये?
4. तीन प्रदक्षिणा लगाने की बात क्यों कही गई है?
5. पुंज चढ़ाने का श्लोक बतायें तथा कितनी ढेरी से पुंज चढ़ाना चाहिए?
6. निःसही और अस्सही का क्या अर्थ है?

अध्याय-10

गुरु उपासना

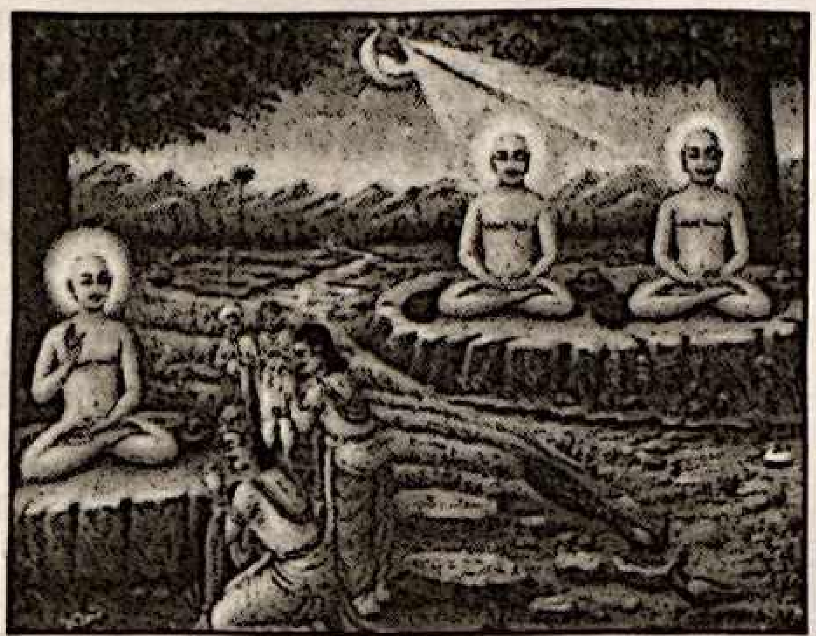

(रात्रि के समय प्रवचन के बाद कुछ लोगों में चर्चा हो रही थी।)

जिनदासजी — पंडित! हमने सुना है कि अपने पास के नगर में मुनि संघ आया है।

पंडितजी — अच्छा कब? कहाँ?

जिनदासजी — यह तो पता नहीं लेकिन पास के ही ग्राम में विराजमान है।

पंडितजी — तो फिर हम लोग दर्शनाथ चलेंगे और उनसे अपने नगर में पधारने की प्रार्थना करेंगे। (सभी लोग प्रसन्न हुए और दूसरे दिन ही प्रभात में मुनिराज के पास पहुँच गये, जय-जयकार से आकाश गूँज गया।)

पंडितजी — मुनि संघ की जय।
जैन धर्म की जय .... इत्यादि।

(सभी के हाथ में श्रीफल है और सभी विनयवंत एवं करबद्ध हो प्रार्थना करने लगे।)

पंडितजी — महाराज जी हम सब .... नगरवासियों की प्रार्थना है कि आप हमारे नगर में भी पधारकर हम सबको धर्मामृत से सिंचित करने की कृपा करें। (सभी ने श्रीफल चढ़ाया और नमस्कार कर योग्य स्थान पर बैठ गये।)

मुनिराज — आप सभी में सद्धर्म की वृद्धि हो। आप लोगों ने प्रार्थना की वह यद्यपि श्लाघनीय है। किन्तु हम वचन तो नहीं देते, हाँ पहुँचने का प्रयास करेंगे। (सभी लोग बड़ी प्रसन्नता से अपने नगर लौट गए। दूसरे ही दिन उन्हें मालूम चला कि महाराज श्री का अपने नगर की ओर प्रस्थान हो गया। गाँव में हलचल मच गयी।)

पंडितजी — सेठजी, महाराज श्री आ रहे हैं। चलिए उन्हें लेने चलें। (समाचार फैलते ही नगर के बाहर बहुत बड़ा समूह एकत्रित हो गया और महाराज को आते देखा तो सभी गद्‌गद् ध्वनि में ....) परम पूज्य मुनि संघ की जय! जैन मुनि देख लो! त्याग करना सीख लो। ये वैरागी कहाँ चले-पापाचार मिटाने को। जैन मुनि हमारे हैं, नगर आज पधारे हैं।

मुनि संघ की लहरों से, अपने कर्मों को धो लो।

जब तक सूरज चाँद रहेगा, मुनियों का सम्मान रहेगा।

(इत्यादि नारों से और बाजों की आवाज से आकाश गूँज उठा, सभी ने मुनि श्री को नमोस्तु किया और जुलूस में व्यवस्थित हो गए। सर्वप्रथम बैंड, फिर झंडे, भजन मण्डली, मुनिराज पीछे, समाज के लोगों के पश्चात् महिलाएँ मंगल गीत एवं नारे बोलते हुए। मन्दिर पहुँचकर दर्शन के उपरान्त महाराज श्री योग्य स्थान पर बैठ गये।)

पंडितजी — प्रासुक जल लाओ, हम महाराज के पाद प्रक्षालन करेंगे।

जिनदासजी — यह लो पंडित जी जल और यह आरती ....।

(सभी ने विनय और भक्ति से मुनि श्री के पाद प्रक्षालन किए, आरती की। पश्चात् महाराज श्री के मंगल आशीर्वचन भी सुने उसी समय सेठ जी एक बर्तन में जल लाते हुए।)

सेठ — चलो, चलो रास्ता दो, मुझे कोई छूना नहीं। मैं शुद्धि में हूँ। (मुनि श्री के पास पहुँचकर विनयपूर्वक) महाराज जी! शुद्धि

के लिए जल आ गया। (महाराज श्री शुद्धि कर, आहार चर्या हेतु निकलते हैं। घर-घर में चौके लगे हुये हैं। व्यवस्थापक लोग व्यवस्था बना रहे हैं।) चतुर्विध संघ क्रमश: आहार के लिए निकला। आचार्य श्री व मुनिराजों का दाहिना हाथ कंधे पर तथा बायें हाथ में पिच्छि कमण्डल था। यह देख सभी समझ गये कि महाराज आहारार्थ निकले हैं अत: चौके वालों की सामूहिक आवाज हे स्वामी! नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!!! अत्र!अत्र!अत्र!तिष्ठ!तिष्ठ!तिष्ठ। (एक चौके में महाराज श्री की विधि मिल गयी, महाराज श्री खड़े हो गए, सभी ने तीन प्रदक्षिणा लगाकर।) हे स्वामिन्! मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि, आहार-जल शुद्ध है, गृह में प्रवेश कीजिए। (महाराज श्री ने भोजनाशाला में पैर धोकर प्रवेश किया। यह देख दर्शनार्थ आयी हुई पिंकी ने अपने पापा से पूछा)

पिंकी — पापा! ये सब क्या कर रहे हैं?

पापा — बेटा! मुनि श्री की नवधा भक्ति कर रहे हैं।

पिंकी — क्यों?

पापा — क्योंकि मुनिराज बिना नवधा भक्ति के आहार नहीं लेते।

पिंकी — पापा! नवधा भक्ति क्या है, मुझे समझाइये न?

पापा — नौ प्रकार की भक्ति को नवधा भक्ति कहते हैं।

1. प्रतिग्रह	पड़गाहन करना
2. उच्चासन	पाटे या चौकी पर बैठने की प्रार्थना करना।
3. पाद प्रक्षालन	चरण धोकर गंधोदक सिर से लगाना।
4. अर्चना	अष्ट द्रव्य से पूजन करना।
5. नमस्कार	सिर झुकाकर नमस्कार करना।
6. मन शुद्धि	मन में मलिनता नहीं रहना।
7. वचन शुद्धि	अयोग्य वचन नहीं बोलना।
8. काय शुद्धि	धोती-दुपट्टे और शरीर की शुद्धि।
9. आहार जल शुद्धि	शुद्ध, प्रासुक भोजन देना।

पिंकी — पापा! मुनिराज को क्या हर कोई आहार दे सकता है?

पापा — नहीं बेटा, दाता के सप्त गुणों से युक्त व्यक्ति ही आहार दे सकता है।

पिंकी — दाता के सप्त गुण कौन-कौन से हैं?

पापा —

श्रद्धा	दान और दान के फल में विश्वास।
भक्ति	विनयपूर्वक उनके गुणों में हार्दिक अनुराग।
तुष्टि	यथालब्ध पात्रों में सन्तोष, हार्दिक अनुराग।
विज्ञान	विवेकपूर्वक आहार देना।
अलुब्धता	दान देते समय लोभ नहीं करना।
क्षमा	क्रोध नहीं करना।
सत्व	हार्दिक दया रूप कोमल परिणाम रखना।

पिंकी — पापा! मुनिराज श्री को आहार किस प्रकार देना चाहिये।

पापा — पाँच दूषण रहित तथा पाँच भूषण (गुण) सहित देना चाहिए।

पाँच दूषण (दोष) 1. विलम्बता से दान देना। 2. उदास होकर दान देना। 3. दुर्वचन कहकर दान देना। 4. निरादर से दान देना। 5. दान देकर पश्चाताप करना।

पाँच भूषण 1. आनंदपूर्वक दान देना। 2. आदरपूर्वक दान देना। 3. प्रिय वचनपूर्वक दान देना। 4. निर्मल भावपूर्वक दान देना। 5. दान देकर अपना अहो भाग्य मानना।

पिंकी — पापा! आहार देने के क्या-क्या महत्व हैं?

पापा — बेटा, गृहस्थ जीवन में उपार्जित पाप एकमात्र दान से ही धुलते हैं। विधिपूर्वक आहार देने से स्वर्ग अथवा भोगभूमि की प्राप्ति होती है, परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पिंकी — पापा! आहार दान का मुख्य प्रयोजन क्या है?

पापा — आहार से ही शरीर की स्थिति संभव है और शरीर की स्थिति से ही रत्नत्रय की रक्षा एवं वृद्धि संभव है अतः उनके रत्नत्रय की साधना में कोई बाधा न पहुँचे, यही मुख्य उद्देश्य है।

पिंकी — पापा! मैं भी महाराज को आहार देना चाहती हूँ।

तू तो आठ वर्ष से बड़ी हो चुकी है, क्योंकि आठ वर्ष से कम उम्र वालों से महाराज आहार नहीं लेते।

पापा — बहुत अच्छा बेटी, मैं भी आहार दूँगा लेकिन ....

पिंकी — लेकिन क्या पापाजी?

पापा बेटा, मुझे शुद्ध धोती-दुपट्टे तथा आपके लिए शुद्ध साड़ी की व्यवस्था करनी पड़ेगी।

पिंकी पापा मैं अभी इसकी व्यवस्था करती हूँ।

पापा बेटा! मुझे यज्ञोपवीत भी पहनना होगा।

पिंकी अच्छा पापा मैं उसकी भी व्यवस्था करती हूँ।

(दोनों तैयार होकर शुद्ध चौके में जाते हैं और सभी प्रसन्नता एवं भक्तिपूर्वक आहार देते हैं। चौके में प्रकाश है तथा चंदोबा भी बँधा है। आहार के पश्चात् सभी साधु की जय बोलते हैं, भक्ति गीत गाते हैं। महाराज श्री को मन्दिर तक पहुँचाने भी जाते हैं।)

सेठजी पण्डितजी! यदि मुनि संघ की व्यवस्था में कोई कमी हो तो ध्यान रखना। हमारे योग्य कोई सेवा कार्य हो तो अवश्य बता देना। (समाज के धार्मिक लोग हर तरह की व्यवस्था को समय के पूर्व ही करते हैं। शाम के समय वैय्यावृत्ति में कोई पीछे नहीं रहता।)

पंडितजी सेठजी! देखो, हम सभी के कितने अच्छे भाग्य हैं। महाराज श्री के समागम से हम सबको धर्म का कैसा पावन अवसर प्राप्त हुआ है।

केवलचन्द्र हाँ, पण्डितजी! प्रातः काल मुनि संघ के प्रवचनों का लाभ, आहार दान का लाभ, दोपहर में मुनि श्री के मुख से शास्त्र प्रवचन का लाभ, शाम को वैय्यावृत्ति का लाभ।

धर्मचन्द और बालकों एवं युवकों में कितनी अपूर्व जागृति है कि वे मन्दिर आने लगे और धर्म कार्यों में अग्रसर हो गए। महाराज श्री के आगमन से अपूर्व ही लाभ हुआ है।

(किसी एक दिन मुनि संघ के विहार का संकेत हुआ, चर्चा फैल गयी, सुनते ही धार्मिक लोग एकत्रित हो गये, सभी ने मुनि संघ को रोकने का अथक प्रयास किया किन्तु असफल रहे।)

पंडितजी जिनदास जी, महाराज श्री के विहार की व्यवस्था करना अपना परम कर्त्तव्य है।

जिनदास मैं महाराज श्री को यथास्थान पहुँचाकर ही लौटूँगा।

पंडितजी मैं भी चलूँगा।

सेठजी मैं भी चलूँगा।

जिनेश हम सब युवक भी चलेंगे। देखते ही देखते विहार के बाजे बजने लगे। जय जयकारों से आकाश गूँजने लगा, अनेकों ने यथायोग्य व्रत, नियम लिये। नगर के आबाल, वृद्ध सभी महाराज श्री को नगर के बाहर तक भेजने गये। उनके आगे समाज के कुछ प्रबुद्ध एवं युवक लोग महाराज श्री को अगले मुकाम तक पहुँचाने गए।

गुरुवर आये

नगरी में हैं गुरुवर आये,
परम दिगम्बर जो कहलाये
उनको शीश झुकाते हैं,
नवधा भक्ति गिनाते हैं।
पहली है पड़गाहन भक्ति,
दूसरी है उच्चासन।
तीसरी है पाद पृच्छालन

चौथी होती पूजन
नमोस्तु है पाँचवी भक्ति

छटवी होती है मन शुद्धि।
सातवी है वचन शुद्धि,
आठवी है काय शुद्धि।
नौवी आहार जल की शुद्धि,
विधि देखो कितनी है ईजी।
इस विधि से आहार करायें,
आहार कराके पुण्य कमायें।।

प्रश्नावली

1. मुनिराज के पड़गाहन की विधि क्या है?
2. मुनिराज को आहार देते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?,
3. मुनिसंघ के आगमन और विहार के समय समाज का क्या कर्त्तव्य है?

संकट में ही धर्म की परीक्षा होती है,
कठिनाइयों में धर्म की साधना होती है।
सहन कर लो अनादर को भी समता से तुम,
धर्मात्मा की पहचान सत्य समता से होती है।।

भगवान बनना चाहते हो तो विधि पूछ लो उनसे,
भगवान बनना चाहते हो तो कुछ सीख लो उनसे,
रास्ते पर पहले भक्ति नगर मिलता है,
वहाँ तक जाने का प्रथम मार्ग पूछ लो उनसे।।

गणाचार्य श्री विरागसागरजी कृत मुक्तकांजलि से साभार

अध्याय-11

स्वस्थ जीवन के उपाय

प्रातः जल्दी बिस्तर छोड़कर पहले घर के बाहर निकलें। बहती हुई शुद्ध हवा का आनन्द लें। यह हवा सौ रोगों की दवा है। मनुष्य पानी और अन्न बिना रह सकता है, किन्तु हवा के बिना नहीं रह सकता। वायु का नाम प्राण वायु है जो श्वास के रूप में भीतर जाती है, हो सके तो आप कम से कम एक किलोमीटर दौड़ लगाकर वापिस घर आ जायें, इससे आपको अत्यन्त स्फूर्ति आयेगी। उस शुद्ध हवा में भीतर की गन्दी हवा निकल जावेगी। घर आकर शौच आदि से निवृत हो लें। इससे भी आपके शरीर की अशुद्ध वायु निकल कर शुद्ध हो जावेगी पश्चात् व्यायाम अवश्य करें। व्यायाम में आप ऊगते सूर्य को देखते हुए खुले शरीर से सूर्य स्नान करें। प्रत्येक अंग में स्फूर्ति, शक्ति एवं रक्त संचार के लिए खेल, दण्ड, बैठक, आसन जो व्यायाम शिक्षक ने स्कूल में सिखलाया हो, वह कर लें।

प्रातः आप दातौन-कुल्ला और मुँह धो लेवें। शौच के पहिले एक गिलास जल छानकर भी पी सकते हैं। स्नान के लिए शीतल छने जल का उपयोग करें। स्नान से आप में नया जीवन और उत्साह आवेगा। आपके शरीर में करीब 70 लाख से भी अधिक रोम छिद्रों का मल साफ हो जावेगा। गन्दा पसीना भी निकल जावेगा, आप स्नान करके तौलिये को गीला कर शरीर रगड़ लें, ताकि साबुन लगाने की आवश्यकता न हो। क्योंकि प्रायः साबुन चर्बी मिश्रित मिलता है। साबुन के बदले काली मिट्टी का प्रयोग करें। भोजन में दूध, चावल, रोटी, दाल और साग का सादा सात्विक भोजन करें। माँस, अण्डा आदि अशुद्ध और तामसिक भोजन न करें क्योंकि इससे आप में तामसोचित दुर्गुण और अनेक विकार उत्पन्न हो जावेंगे। आप शान्त दिमाग नहीं रख पायेंगे। भोजन संतुलित करें। तथा दिन में दो बार से अधिक नहीं करें। दिन भर खाते रहना पशुओं का काम है। पोषक रसों में जल, विटामिन, चिकनाई, शर्करा, लवण और प्रोटीन ये छह तत्व भोजन में आवश्यक हैं। जल, भोजन के बाद खूब पीते रहें। दूध में प्रोटीन तत्व अधिक रहता है। दाल, चावल, केला, चीकू में शर्करा तत्व रहता है। घी, तेल में चिकनाई रहती है। सागभाजी में लवण रहता है इन सभी खाद्य सामग्री में विटामिन रहता है। अतः

उचित मात्रा में सभी वस्तुएँ भोजन में लेते रहें। इनमें से किसी भी तत्व की कमी से अनेक रोग हो जाते हैं, जिनके शिकार लाखों बच्चे, पुरूष, स्त्रियाँ देश में कष्ट पा रहे हैं। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहने पर बुद्धि और मस्तिष्क बराबर अपना काम करते रहेंगे। धर्म ध्यान में मन लगेगा, व्यवहार में कुशलता आयेगी।

भोजन सामग्री के संबंध में जानकारी आवश्यक है। किस वस्तु को किसके साथ खाना या नहीं खाना चाहिए। किसमें कौन गुण है? किसकी कितने समय की मर्यादा है उसके जाने बिना अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। भोजन स्वास्थ्य के लिये किया जाता है, न कि स्वाद के लिये। जो स्वाद के लिए भोजन करते हैं, चटपटी मसालेदार चीजें खाते रहते हैं वे अस्वस्थ रहते हैं उनका जीवन हमेशा खतरे में बना रहता है। अजीर्ण में भोजन न कर, समय पर उचित पथ्य आहार करने वाला नीरोग रहता है। भोजन भूख लगने पर करना चाहिए तथा दिन में ही करना चाहिए। जो व्यक्ति हितकारी, अल्पाहारी है, उसे वैद्य, डॉक्टर से इलाज कराने की आवयश्कता नहीं होती और न ब्लड-प्रेशर आदि भंयकर रोगों का वह शिकार होता है। जो अशुद्ध, अमर्यादित या अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हैं उन्हें अनेक रोग हो जाते हैं जैसे संग्रहणी, पेचिश, पीलिया, लीवर-कैंसर, किडनी की खराबी आदि।

धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्यं मूलकारणम्

आरोग्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की साधना का मूल माना गया है।

शब्दार्थ

निवृत्त काम पूरा कर लेना। तामसिक दुर्गुण पैदा करने वाले।

फोर ओ क्लॉक

फोर ओ क्लॉक-2
बजा अलार्म बोला कॉक।
निद्रा छोड़ो जागो तुम,
पंच प्रभु को ध्यायो तुम।
सौ रोगों की एक दवा है,
सुप्रभात स्तुति भी गाओं,
आसन प्रतिदिन तुम लगाओ।
मंजन करके चेहरा धोना,
स्नान करके शुद्ध भी होना,
जिन मन्दिर तुम डेली जाना,
प्रभु गुरु को शीश झुकाना
मात-पिता को करो प्रणाम
ऊँचा करना उनका नाम
स्कूल रोज जाओगे,
ध्यान से पढ़कर आओगे।
भोजन सादा खाओगे,
पेटू न कहलाओगे।
नहीं किसी से लड़ा करो,
पाठशाला में पढ़ा करो।
राईट हैल्थ बनाना हो तो
टाईम टेबल टाईट रखो।

प्रश्नावली

1. स्वस्थ रहने के लिए वायु, स्नान, व्यायाम और भोजन की उपयोगिता बताओं?

गुरु वंदना

श्रमणी आ. वियुक्त

गुरुवर आप विराग हैं, राग द्वेष से दूर।
अनुरागी सबको करो, अचरज है भरपूर।।
गुरुवर श्यामल मेघ हो, गरजो बरसो नाथ।
लेकिन कभी न छोड़ना, मुझ अनाथ का हाथ।।1।।

गुरु पूनम के चंद्रमा, मैं अंधियारी रात।
मेरे जीवन में करो, विराग गुरु प्रकाश।।
जग तो दुख की धूप है, विराग सुख की छाँव।
साथ हमें लेकर चलें, मुक्तिपुर के गाँव।।2।।

गुरु ऐसे वैद्य हैं, करते हैं मद चूर।
आम की देते दवा, भव भ्रम करते दूर।।
हिम्मत जब-जब टूटती, कोई न देता साथ।
तब आशा के सूर्य बनें, मेरे गुरु विराग।।3।।

शिष्य भले ही दूर हो, मन से रहता पास।
देते हैं आशीष उसे, मेरे गुरु विराग।।
स्वार्थी हैं माता-पिता, स्वार्थी सब संसार।
गुरु विराग निःस्वार्थी, जीवन के आधार।।4।।

काम सभी बना रहे, खुद रहते निष्काम।
गुरु विराग सागर मेरे, इस युग के भगवान।।
त्याग-तपस्या, साधना, करते छोड़ प्रमाद।
राजहंस जिनधर्म के, मेरे गुरु विराग।।5।।

नौ करोड़ में तीन कम, जितने हैं मुनिराज।
उन सबके हम भक्त बनें, कहते गुरु विराग।।
श्रावक का कर्त्तव्य है, श्रमणों का सम्मान।
पंथ, संघ और परंपरा मत देखो नादान।।6।।

पानी पीना छानकर, वाणी कहिए तौल।
बार-बार फिर न मिले, जैनधर्म अनमोल।।
सूर्योदय से पूर्व जो, उठता बिना प्रमाद।

मिलता उसे अपूर्व है, सरस्वती-प्रसाद।।7।।

हे गुरुवर आशीष दो, पायें सम्यग्ज्ञान।
प्रज्ञा शिरोमणि आप हैं, हम बच्चे नादान।।
हर्षित होते हम सभी, देख गुरु मुस्कान।
हाथ उठा आशीष दें, मिल जाता वरदान।।8।।

मयूर पिच्छी धारते, रखे कमंडल साथ।
आगम की भाषा कहें, मेरे गुरु विराग।।
बिना गुरु के जिंदगी, बिना ड्राइवर कार।
कब किस गड्ढे में गिरे, हो जाए बेकार।।9।।

योगी बनना श्रेष्ठ है, उपयोगी है मध्यम
दुरूपयोगी न बनो, करके काम अधम।।
पढ़ें लिखें आगे बढ़ें, लक्ष्य बने आसान।
लेकिन हम भूलें नहीं, गुरु विराग का नाम।।10।।

घड़ी सदा टिक-टिक करे, रूक कर ना लें श्वांस।
श्वांस सदा क्या साथ हो, करना मत विश्वास।
काम कोई ऐसा करें, बने स्वयं पहचान।
मात-पिता और देश का, करना ऊँचा नाम।।11।।

अच्छे बच्चे हम सभी मंदिर आते रोज।
लड़ाई-झगड़े न करें, अच्छी रखते सोच।।
जहाँ गुरु ने जन्म लिया, बना विरागोदय।
नगर पथरिया कह रहा, गुरु विराग की जय।।12।।

मन से हिम्मत हारना, कायर का है काम।
गिर-गिर भी उठ जाना, वीरों की पहचान।
व्रत-संयम जप-नियम में, अचल मेरू गुरुदेव।
निज समान गुण दीजिए , हर कर सारे ऐब।।13।।

एक अंजलि पानी भला, दूर करे जो प्यास।
सागर का खारा सलिल, अभिमानी का साथ।
दोनों हाथों दान दें, हो मुख से गुणगान।
सुख-दुख में एक रहें, चेहरे पे मुस्कान।।14।।

सपने ऊँचे देखना, मात्र नहीं पर्याप्त।
भाग्य जगाता है सदा, व्यक्ति का पुरूषार्थ।।
नित करते गुरु वंदना, गुरु भक्ति के साथ।
उनको मिलता है सदा, गुरु का आर्शीवाद।।15।।

खिलता यह जीवन रहे, निर्विकार बेदाग।
देते शुभ आशीष रहें, मेरे गुरु विराग।।16।।

परम पूज्य उपसर्ग विजेता, युगप्रमुख श्रमणाचार्य, गणाचार्य
डॉ. विरागसागरजी महाराज द्वारा लिखित, संपादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान
दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड द्वारा प्रकाशित

क्र. सत् साहित्य	मूल्य
1. टीका साहित्य	
1. सर्वोदया टीका संस्कृत-1, 2 (बारसाणुवेक्खा)	150/-
2. रत्नत्रयवर्धिनी टीका संस्कृत (रयणसार)	
3. श्रमण प्रबोधनी टीका संस्कृत (पाहुड़द्वय) लेखन जारी	
2. शोधपूर्ण साहित्य	
4. शुद्धोपयोगी	40/-
5. सम्यग्दर्शन	35/-
6. आगम चक्खू साहू	25/-
7. सल्लेखना से समाधि	30/-
8. संत साधना के प्रेरक प्रसंग	20/-
9. परम दिग. मुनि (हिन्दी, मराठी, तमिल, कन्नड़, अंग्रेजी)	40/-
10. सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
11. तीर्थंकर दिव्य दर्शन	30/-
12. तीर्थंकर दर्शन	-
13. व्यसन विचार (हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी)	25/-
14. फूल नहीं हैं काँटे	-
15. संस्कार सुरभि (मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी)	25/-
16. जिनेन्द्र दर्शन जिनेन्द्र पूजन	20/-
17. आध्यात्मिक शंका-सामाधान	30/-
18. आध्यात्मिक तत्त्वचर्चा	40/-
19. श्रमण आहारचर्या	
3. चिंतन साहित्य	
20. चैतन्य चिंतन, भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
21. चैतन्य चिंतन, भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
22. चैतन्य चिंतन, भाग-3 (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
बालकोपयोगी साहित्य	
23. बाल विज्ञान, भाग-1 (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, अंग्रेजी)	25/-
24. बाल विज्ञान, भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी)	10/-
25. बाल विज्ञान, भाग-3	10/-
26. बाल विज्ञान, भाग-4	10/-
27. कर्म विज्ञान, भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी)	10/-
28. कर्म विज्ञान, भाग-2	10/-
29. कर्म विज्ञान, भाग-3	
कथा साहित्य	
30. नैतिक कथा मंजूषा, भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
31. नैतिक कथा मंजूषा, भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
अनुवाद साहित्य	
32. बारसाणुवेक्खा	

33. परमरत्नार्चना संग्रह	20/-
34. सामायिक पाठ	10/-
पद्य साहित्य	
35. भावों के विशुद्धि क्षण	15/-
36. मुक्तकांजलि, भाग-1	15/-
37. मुक्तकांजलि, भाग-1	15/-
38. नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा	15/-
संकलित/सम्पादित साहित्य	
39. साधना से समाधि	20/-
40. विमल नित्य पाठावली	80/-
41. आराधना	35/-
42. सुभाषित सहस्त्रम्	40/-
43. आप्त अर्चना	-
44. मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तामर)	65/-
45. साधना	30/-
46. अनुप्रेक्षा	10/-
47. जिनागम दीप	251/-
48. सम्मेदशिखर विधान	-
49. चारित्र शुद्धि व्रत	25/-
50. साधना के सोपान	-
51. करुणामूर्ति संत	100/-
52. तपस्वी सम्राट	10/-
53. यज्ञोपवीत	
54. पद्मपुराण प्रश्नोत्तरी	100/-
55. स्तोत्र भारती	50/-
एकांकी/ नाटक साहित्य	
56. सत्य मित्र-सत्य दृष्टि	-
57. प्रद्युम्न हरण	-
आचार्यश्री व्यक्तित्व पर आधारित साहित्य	
58. विरागाभिवंदन अभिनंदन	
59. निःस्पृही संत, भाग-1, 2	60/-
60. विराग सेतु (महाकाव्य), भाग-1 (हिन्दी गुजराती)	100/-
61. विराग सेतु (महाकाव्य), भाग-2 (हिन्दी गुजराती)	
62. संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागरजी	65/-
63. कमल से महाकमल	-
64. घटनायें ये जीवन की	80/-
65. दिगम्बरत्व के चितेरे	150/-
66. विराग सिंधु की उर्मियाँ	15/-
67. विराग वाटिका	180/-
68. भक्ति की झंकार (भाग-1, 2, 3)	25/-
69. विरागार्चना (पूजन, विधान आरती)	40/-
70. विराग काव्यांजलि	140/-

प्रवचन साहित्य

71.	धर्म पीयूष	35/-
72.	ऐसे चलो मिलेगी राह	40/-
73.	दूर नहीं है मंजिल	30/-
74.	उड़ रे पंछी	101/-
75.	तीर्थंकर वर्धमान	15/-
76.	पहले देवपूजा, फिर काम दूजा	25/-
77.	तीर्थंकर ऐसे बनो	85/-
78.	तट की ओर	101/-
79.	सिर्फ दो प्रवचन	10/-
80.	इष्टोपदेश प्रवचन	-
81.	मानतुंग की अमर भक्ति	150/-
82.	कल्याणक महोत्सव	20/-
83.	दान तीर्थ	20/-
84.	धर्म के सोपान	20/-
85.	जीवों पर दया करो-शुद्ध शाकाहार करो	20/-
86.	बुराईयाँ ही जेल- अच्छाईयाँ ही मुक्ति	10/-
87.	प्रवचन वर्षा	25/-
88.	कर्तव्यमेव कर्तव्यम्	25/-
89.	श्रद्धा प्रसून	25/-
90.	मोक्ष की राह	25/-
91.	विरागमृत (भाग-1)	30/-
92.	विरागमृत (भाग-2)	30/-
93.	समाधि तंत्र प्रवचन	100/-
94.	समायोचित शिक्षायें, भाग-1	20/-
95.	समायोचित शिक्षायें, भाग-2	
96.	समायोचित शिक्षायें, भाग-3	
97.	f वराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)	10/-
98.	रजत पुष्प	51/-
99.	कहानी सबसे सुहानी	30/-
100.	अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी)	20/-
101.	संस्कार की लहरें	20/-
102.	चलो चलें प्रभु दर्शन को	30/-
103.	आध्यात्मिक पर्व (दशलक्षण धर्म)	30/-
104.	घर-घर की कहानी	30/-
105.	बारसाणुवेक्खा प्रवचन	100/-
106.	पर्यूषण निधि	15/-
107.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 1. धर्मोपदेशामृतम्	175/-
108.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 2. दानोपदेशम्	40/-
109.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 3. अनित्य पंचाशत्	50/-
110.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 4-5 एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम्	85-
111.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 6. उपासक संस्कारः	60/-

112.पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम्	60/-
113.पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 8-9 सिद्ध स्तुति एवं आलोचना	85/-
114.आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन	10/-
115.मेरी भावना प्रवचन	50/-
116.फॉर यूथ प्रोगेस	22/-
117.रत्नकरण्ड श्रावकाचार प्रवचन-1	100/-
118.सामायिक पाठ प्रवचन	85/-
119.अपने नैतिक कर्तव्य	30/-
120.क्यूं इतना अभिमान है	30/-
121.सिद्धों का खजाना	30/-
122.अपनी-अपनी आभायें...लेश्याएँ	100/-
123.स्वर्ण पुष्प	30/-
124.ऐसे बनायें घर को स्वर्ग	/-
125.विराग संध्या	20/-
126.ज्ञानवर्धक विधान	30/-

संगोष्ठी एवं स्मारिका साहित्य

127.सम्यग्दर्शन संगोष्ठी (तारंगा 2010)
128.सर्वोदया टीका अनुशीलन (जयपुर 2012)
129.बीना चामुर्मासिक स्मारिका (1994)
130.विराग अनुभूति (लोहारिया 2010)
131.विराग प्रभावना (अजमेर 2011)
132.स्वर्णिम विरागांजलि (जयपुर 2012)
133.विराग पुष्प पुंज (इंदौर 2013)

VIDEO C.D.

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि
2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयंती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की यात्रा (अग्नि परीक्षा)
4. आर्यिका विशान्तश्री माताजी (समाधि)
5. अहिंसा व्यसन मुक्ति एवं शाकाहार अभियान
6. लोक और मध्यलोक
7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा
8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन
10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली
12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें- श्रवणबेलगोला
14. 11 दीक्षायें- गाँधीनगर
15. 8 दीक्षायें- गिरनारजी
16. 11 दीक्षायें- किशनगढ़
17. 26 दीक्षायें-उदयपुर
18. 25 दीक्षायें- जयपुर
19. स्वर्णिम जन्म जयंती
20. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन (बारसाणुवेक्खा, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र, पद्मनन्दि पंचविंशतिका भाग-1-14)
21. मातृभक्ति
22. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

AUDIO. C.D

1. श्याम के लाल
2. साधना के सरताज
3. गुरुवर कस जयकारा
4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण)
5. श्री विराग सागर नमोस्तुते
6. करें गुरु भक्ति
7. चलें गुरुवर के द्वार
8. गीत गुरु के गायेंगे
9. जियो हजारों साल गुरुवर
10. मेरे मन वीणा के तारे
11. विराग स्वर्णोत्सव
12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का
13. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज पूजा
14. हे सन्मति-सन्मति दो

परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के राष्ट्रीय आचार्य पदारोहण के अवसर पर उनके शिष्य परशिष्यों का विशाल

यति सम्मेलन एवं युग प्रतिक्रमण, करगुवा जी, झांसी (उ.प्र.) – 2017